राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 40.00 संख्या 585
चक्र
नागराज-ध्रुव का मल्टीस्टार महाविशेषांक

हर घटना का एक चक्र होता है। सूर्य उगता है, डूबता है और फिर उगता है। पौधा, पेड़ बनता है और उसके बीज पैदा होकर दूसरे नए पेड़ों का सृजन करते हैं। लेकिन जैविक विकास की प्रक्रिया इसका अपवाद है। अमीबा जैसे एक कोशिकीय जीवों से पृथ्वी पर जीवन की शुरूआत हुई और फिर इन्हीं कोशिकाओं ने करोड़ों वर्षों के दौरान लगातार विकसित होकर जल, थल और आकाश में नए-नए विभिन्न जीवों को विकसित किया। और विकास की सीमा अपने चरम पर पहुंची और विकसित हुआ, मनुष्य। अब एक सीधी लाइन में चलती यही प्रक्रिया एक खतरनाक रूप धारण करने जा रही है। इंसान अब फिर से अमीबा बनने की राह पर चल पड़ा है। क्योंकि विकास की प्रक्रिया को उल्टा करके एक अंजान शक्ति ने बना डाला है...

चक्र

visit us at: www.rajcomics.com
email: rajcomics2000@yahoo.co.in

एक सुहावना दिन-
एक सुहावना समुद्र तट-
और एक सुहावना साथी-
स्वर्ग शायद इसी को कहते हैं!
मुझको तो यकीन ही नहीं आ रहा है कि मैं तुम्हारे साथ मरीना बीच घूम रही हूं!
हम लोगों को घूर-घूर कर देख रहे लोगों की तरफ देख लो! यकीन आ जाएगा ज़ीना!
यही तो मजा है परमाणु के साथ बीच पर घूमने का!
लेकिन ये बताओ कि तुमको इतनी फुर्सत कैसे मिल गई कि मुझे घुमाने के लिए चेन्नई बुला भेजा?
ओ मेरी...
टॉमी! कहां भाग रहा है! वापस आ!
गुर्रर्रर्र! भौं भौं!
मम्मी!
देखो न! टामी को एकाएक क्या हो गया है?

चक्र
ये पागलों जैसे हरकतें क्यों कर रहा है?
कहीं ये किसी को काट न ले?
हो सकता है! इसको रोकना होगा!
अरे रोको! कोई पकड़ो कुत्ते को! वर्ना ये किसी को काट खाएगा!
फिकर नॉट आंटी!
मैं रोकता हूं इसको! मेरे पापा...
...एक डॉग ट्रेनर हैं ऽऽऽऽ
बचाओ!
शीना! मैं आया!
ऐ ऐ ऐ ऐ! बैड डॉग!
अपने साइज वाले से भिड़ न!
मैं मजाक कर रहा था! शांत हो जा! यस हियर इज ए नाइस डॉगी!
पर टॉमी शायद रुकने के मूड में नहीं था-
चाहे छल से-
या बल से-
आऊऽऽऽऽ

क्या हुआ, परमाणु?
मुझको तो कुछ नहीं हुआ, पर इस कुत्ते को जरूर कुछ हो गया है! ये किसी खतरे को भांप रहा है!
इसने तुमको काटा तो नहीं?
नहीं, बस मेरे जूते को...
ओफ्! जल्दीबाजी में मैं अपने पुलिस शूज उतारना ही भूल गया!
हाट! ये जूता तो पुलिस-शू है!
यानी...यानी...
...तुम विनय हो!
यस, यू आर इंस्पेक्टर विनय!
ओ गॉड! मेरी जरा सी चूक ने आज मेरा राज खोल दिया!
और वह भी पूरी भीड़ के सामने!
सुनो... सुनो, शीना, मैं... मैं...
मिमियाना बंद करो! मैं समझ गई तुम्हारा पूरा प्लान! तुम जानते थे कि मैं तुम्हारे साथ कभी भी घूमने नहीं जाती!
इसीलिए तुमने परमाणु का वेष धरा और मुझे चेन्नई बुलाकर मुझको धोखा दिया!
एवेरी चीप ट्रिक! तुमको परमाणु के रूप में देखना भी परमाणु का अपमान है!
बच गया!
तुम बिल्कुल ठीक समझी शीना! पर ये सब मैंने तुमको खुश करने के लिए...
शटअप!

मैं तुमसे बात भी नहीं करना चाहती!
कीप एवे फ्रॉम मी!
ओफ्! शीना का गुस्सा भड़क गया है! और उसके साथ ही उसकी मानसिक धमाके वाली शक्ति भी जाग्रत हो गई है!
मैं अपनी गर्लफ्रेंड को इंप्रेस करने के लिए नागराज की ड्रेस खरीदने आ रहा था! अब नहीं खरीदूंगा!
छुट्टी का कचरा हो... ओssss
जमीन हिल रही है! भूकंप आ रहा है!
शीना कहां है?
शीना कहीं नजर नहीं आ रही है! वह समुद्र में गई थी! कहीं ये भूकंप उसके उन गुस्सैल धमाकों के कारण ही तो नहीं आ रहे हैं जो शीना पानी के नीचे कर रही हो!
मुझको जांच करनी पड़ेगी!
शीना तो कहीं नजर नहीं आ रही है, पर मछलियां उस तरफ से भाग रही हैं!
शायद ये शीना से ही डर रही हैं!
शीना उधर ही होगी!
यस! उधर कोई है! पर इस वक्त मैं सागर तल के एकदम करीब हूं!
शीना इतनी गहरी डुबकी भला कैसे लगा सकती है!

नहीं! ये शीला नहीं है! ये कोई और है! पर मछलियाँ इससे डर क्यों रही हैं? और समुद्र तल के पास का ठंडा पानी इतना गर्म कैसे हो गया है?
मेरे फेफड़ों में ज्यादा ऑक्सीजन नहीं बची है! लेकिन फिर भी मुझको इसके पास जाकर देखना होगा कि ये कौन है और ऐसा क्या कर रहा है जो मछलियों को डरा दे और पानी को गर्म कर दे!
उस आकृति से ऊर्जा का गोला निकलकर चट्टानों की दरार में समा रहा है! और साथ ही साथ वह आकृति पीछे हट रही है! पर क्यों?
धमम्फ
इसने किसी तरह की किरण से ऊर्जा को छुआ, और धमाका हो गया। चट्टानें काँप उठी हैं!
अगले ही पल परमाणु को अपने सवाल का जवाब मिल गया-
यानी भूकंप खुद नहीं आया था! लाया गया था इसके द्वारा...
... धमाके के घातक असर से तो मेरी पोशाक ने मुझको बचा लिया, लेकिन धमाके की फोर्स ने मुझको वहाँ से काफी दूर फेंक दिया है! मुझको सतह पर जाकर सांस भरनी होगी, और फिर वापस उस आकृति के पास जाकर उसको रोकना होगा!
यह तय था कि परमाणु वापस आने में समय नहीं लगाएगा।

लेकिन उतने ही समय में स्थिति का बदल जाना भी तय था-
मुझको वापस आने में कुछ ही सेकंड लगे होंगे! लेकिन उतनी ही देर में इस आकृति ने सैकड़ों या शायद हजारों ऊर्जा के गोले चट्टानों में फिट कर दिए हैं! शायद पहले ये उनकी टेस्टिंग कर रहा था! इस किरण का स्पर्श होते ही सारे गोले फट पड़ेंगे!
पर अब अगर ये गोले एक साथ फट पड़े तो विनाश का ऐसा मंजर नजर आएगा जैसा कि दुनिया ने पहले कभी देखा तो क्या, सोचा तक नहीं होगा!
मुझे इसको रोकना होगा! हर कीमत पर! चाहे वह कीमत मेरी ही जान क्यों न हो!
उस बेखौफ पारदर्शी आकृति को शायद किसी भी खतरे की आशंका नहीं थी-
पर खतरा तो आना ही था-
या तो पृथ्वी पर-
या उस आकृति पर-
और फिर वह चमकती आकृति धमाका करने की स्थिति में रही भी नहीं-
आऽऽऽह! मुझे पृथ्वी पर इस तरह के प्रतिरोध की उम्मीद नहीं थी! पता नहीं मैं इस मुसीबत से निपटने लायक शक्ति लेकर आया भी हूं या नहीं!
परमाणु रस्सी ने ऊर्जा किरण की एनर्जी को सोख लिया-
धमाका नहीं हो पाया-
लेकिन मुझको अपना काम तो पूरा करना ही है!

और इसके लिए मेरे पास जो भी शक्तियां मौजूद हैं मुझे उनका प्रयोग करना ही पड़ेगा!
इस दुनिया में सारी चीजें परमाणुओं के अलग-अलग संयोगों से ही बनी हैं! मैं इस रस्सी में मौजूद परमाणुओं को संयोग ऊर्जा देकर नया रूप दूंगा! ऐसे मैं इस कैद से भी छूट जाऊंगा और अपने प्रतिद्वन्दी पर वार करने योग्य हथियार भी बना लूंगा! एक तीर से दो शिकार!
आऽऽऽह! ये जो भी है, इसके अंदर परमाणुओं द्वारा किसी भी चीज को बना सकने की अद्भुत शक्ति है!
मेरी परमाणु रस्सी अपना आकार बदलकर मुझ पर ही हमला कर रही है!
अणुओं की धार वाले घूमते बेशुमार हथियार परमाणु की तरफ लपके-
परमाणु को पलभर के लिए मौत सामने नजर आ गई-
क्योंकि इस बार उसके पास अपनी बेल्ट के किसी बटन को दबाने का वक्त नहीं था-
और वह पानी के अंदर बोल न पाने के कारण अपने कंट्रोलों को 'वायस एक्टीवेट' भी नहीं कर सकता था-

लेकिन इतनी मजबूरी के बाद भी मौत परमाणु को मजबूर नहीं कर पाई-
आऽऽऽह! ऐसा दूसरा वार मैं नहीं झेल पाऊंगा!
इसीलिए इसको जल्दी से जल्दी काबू में करना होगा! मेरे फेफड़ों की ऑक्सीजन भी खत्म हो रही है! पर इस बार मैं इसको काबू में किए बग़ैर सतह पर नहीं जाऊंगा! और ये एक और कारण है इसको जल्दी से जल्दी काबू में करने का!
मैं परमाणु कणों में बदलकर बचने का खतरा मोल नहीं लूंगा! इसकी ऊर्जा मेरे कणों को बिखेर भी सकती है! परन्तु मैं बचने का एक दूसरा तरीका भी है! श्रिंक पॉवर का इस्तेमाल करके!
परमाणु का शरीर छोटा होता चला गया-
और अब उसके पास बचने के लिए काफी जगह भी थी और वार करने का मौका भी-
वाह! मेरे परमाणु ब्लास्ट इस पर असर डाल रहे हैं!
और परमाणुओं की तरह ये ऊर्जा का रूप नहीं बदल सकता है!
अब ये जल्दी ही मेरे काबू में आ जाएगा!
और मैं सतह पर जाकर अपने फेफड़ों को फिर से ऑक्सीजन से भर...
...अरे! ये इसने क्या किया? इसने पानी को बर्फ में बदलकर मेरे ऊपर बर्फ की एक मोटी पर्त जमा दी है! अब मैं सतह पर सांस लेने नहीं जा सकता!
और मेरे फेफड़े अब फट रहे हैं!
बाजी पलट गई थी-

परमाणु पर वह आकृति फिर से हावी हो रही थी-
आऽऽऽह! ये मुझको धमाके के साथ उड़ा देना चाहता है! इसीलिए मुझको इन ऊर्जा पिंडों के साथ रख रहा है!
मुझको सांस चाहिए! बगैर सांस आए मैं इसका मुकाबला नहीं कर सकता!
पर पानी में सांस आएगी कैसे? अरे हां! आ सकती है!
प्रक्रिया शुरू होते ही परमाणु का शरीर ऑक्सीजन और हाइड्रोजन गैस के गोलों से घिरने लगा-
पानी H_2O होता है! यानी ऑक्सीजन और हाइड्रोजन गैस के संयोग से बना एक द्रव! और 'इलेक्ट्रोलिसिस' की प्रक्रिया के द्वारा पानी को इन दोनों गैसों में अलग करके मैं ऑक्सीजन को प्राप्त कर सकता हूं!
और इलेक्ट्रोलिसिस की प्रक्रिया को मैं परमाणु ऊर्जा से पैदा कर सकता हूं!
आऽऽऽह! अब मैं सांस ले सकता हूं! अब इस मुसीबत को रोक भी सकता हूं!
अब मुझको सूक्ष्म आकार से सामान्य रूप में आकर इससे मुकाबला करना होगा।
परमाणु के आगे बढ़ते ही वह आकृति पीछे हटने लगी-
ये मुझसे डरकर पीछे हट रहा है! पर क्यों?
ओह, समझा!
इसके पास से बुलबुले नहीं निकल रहे हैं! यानी ये सांस नहीं ले रहा है!
क्योंकि इसको हवा से डर है! हवा जरूर इसको कोई नुकसान पहुंचा सकती है!
गुड!
मुझको अंजाने में ही इसको काबू में करने का तरीका हाथ लग गया है!

आऽऽऽ ह! पृथ्वी पर ऐसी अद्भुत शक्ति रखने वाले जीव कहां से पैदा हो गए? वैसे तो मैं भी हवा में सांस ले सकता हूं। पर मुझको अपना पूरा काम पानी के नीचे ही पूरा करना था। इसीलिए मैं अपने शरीर में 'मेटाकॉन' फिट करके आया था, जिसको लगाने के बाद सांस लेने की जरूरत ही नहीं पड़ती!
पर अब अगर मेटाकॉन हवा के संपर्क में आ गया तो यह फट पड़ेगा! और साथ ही साथ मेरा अंत भी हो जाएगा! और मेरे साथ-साथ मेरे हजारों ग्रहवासियों का भी! मुझको इस हवा के गोले से आजाद होना ही पड़ेगा!
पर आजाद होने का कोई रास्ता नहीं था-
और हवा ने 'मेटाकॉन' को खराब करना शुरू कर दिया था-
आऽऽऽ ह! अब मेरा अंत कुछ ही पल दूर है!
पर होनी को शायद यह मंजूर नहीं था-
अरे! बर्फ की पर्त टूट रही है! धमाका हुआ है! पर कैसे?
कारण सामने था-
मुझको पता था कि 'विनय' यहीं पर होगा! अपने आपको परमाणु से ज्यादा ताकतवर साबित करके मुझे इंप्रेस करने के लिए ये कुछ भी कर सकता है!
ये मुझको ढूंढने के लिए पानी के नीचे आया होगा और इस अजीबोगरीब जीव के चंगुल में फंस गया होगा! अब मुझे ही इस जीव पर वार करके इसको बचाना होगा!
शीना! ये मुझको ढूंढती हुई इतनी गहराई तक आ गई है!
ये जरूर मुझको मामूली विनय ही समझ रही है! एक राक्षस के चंगुल में फंसा बेचारा विनय!
अब ये मुझको आजाद कराने के लिए हमला करेगी...

और शीना हमला धमाका करके करती है। और इसके धमाका करते ही हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के इस गोले में आग लग जाएगी। क्योंकि ये दोनों ही गैसें अत्यधिक ज्वलनशील होती हैं।
आऽऽऽह! मेरा शक एकदम सही निकला! अब मुझे राहत पहुंचाने वाली ऑक्सीजन जल चुकी है, और ये प्राणी आजाद हो चुका है!
ओह! ये मैंने क्या किया?
शायद मुझे पहले रुककर स्थिति को ठीक से समझना चाहिए था।
उस प्राणी को मौका मिला-
और उसने यह मौका नहीं गंवाया-
यह आकृति धमाका करने वाली किरणें छोड़ने के साथ ही गायब भी हो रही है!
पर क्यों?
जवाब साफ था-
वह आकृति उस भीषण धमाके में फंसना नहीं चाहती थी, जो किरण का ऊर्जा गोलों की लड़ी से स्पर्श करने पर हुआ था-
आऽऽऽह! यह धमाका तो पूरे एक महानगर को समतल कर देने के लिए काफी है! इससे बचने के लिए मैं परमाणु कणों में नहीं बदल सकता, क्योंकि शीना को मैं सिर्फ अपनी आड़ में रखकर बचा सकता हूं!
जब पानी के नीचे इतना भयंकर हादसा होता है-

तो 'शॉक-वेव्स' पैदा होती है-
सैकड़ों किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार वाली ये शॉक वेव्स पानी में बिना रोक टोक चल सकने के कारण
पानी में या सतह पर मौजूद किसी चीज को तो नुकसान नहीं पहुंचाती हैं-
लेकिन जब ये जमीन के पास आती हैं तो जमीन 'शॉक वेव्स' को रोकती हैं, और-
अरे! समुद्र का पानी तेजी से पीछे खिंचता जा रहा है! पर क्यों?
ये... ये पानी भूकंप आने के बाद पीछे की तरफ जा रहा है!
भागो! सब भागो!
किसी सुरक्षित यानी ऊंचे स्थान पर पहुंचो! या जमीन पर गड़ी हुई जो भी चीज मिले उसको थामकर खड़े हो जाओ! पर पहले भागो!
लेकिन क्यों? बताओ तो सही!
मेरी भूगोल की मैम ने बताया है कि अगर भूकंप आने के बाद समुद्र का पानी पीछे खिंचने लगे तो समझ लेना चाहिए कि...

पानी की दौड़ती हुई विध्वंसकारी दीवार आ रही है!
सूनामी लहरें आ रही हैं!
हे भगवान, रक्षा कर! रक्षा कर हमारी!
प्रकृति के सबसे विध्वंसकारी रूपों में से एक है, सूनामी—
जो शायद किसी ज्वालामुखी के फटने से भी ज्यादा घातक असर वाला होता है—

और इसके रास्ते में आने वाली हर चीज का अंत एक ही तरीके से होता है-
जल समाधि लेकर-
चेन्नई का वह इलाका पानी के नीचे समाता चला गया-
और मरने वाले चीख भी नहीं सके-
क्योंकि पानी के नीचे आवाज नहीं निकलती-
आऽऽऽह! ये मैं कहां पर हूं? शायद कुछ देर के लिए मैं बेहोश हो गया था! पर समुद्र के अंदर इंसानों द्वारा बनाई गई दीवार कैसे आ गई?
पानी से बाहर निकल कर देखना होगा कि उस धमाके ने मुझे कितनी दूर लाकर पटका है!
ओ गॉड! लहरें मुझको बहाकर शहर में ले आई हैं! और ये प्रलयकारी लहरें पूरे शहर को तेजी से अपने आगोश में लेती जा रही हैं! बड़ी-बड़ी इमारतें माचिस के गीले डिब्बे की तरह टूट रही हैं!
विनाशकारी लहरों को रोकना तो मेरे वश के बाहर की बात है, पर इंसानी जानों को तो मैं बचा ही सकता हूं!
क्योंकि कुछ हद तक तो मैं भी इस विनाश का जिम्मेदार हूं!
पर पहले शीना को किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंचाना होगा!

और कुछ ही पलों के बाद, लहरों के अंदर एक अनोखा जाल प्रवेश कर रहा था-
परमाणु जाल-
कई किलोमीटर लंबा और चौड़ा जाल-
जो पानी में फंसे सैकड़ों लोगों को एक साथ बचा सकता था-
ओह! ऐसे मैं ज्यादा कुछ नहीं कर पाऊंगा! मैं इधर कुछ इंसानी जानों को बचाऊंगा, और उधर आगे बढ़ता हुआ पानी और इंसानी जानों को लीलता चला आएगा!
मुझे इस समस्या का स्थायी हल ढूंढ़ना होगा और वह भी जल्दी से जल्दी! क्योंकि...
अरे! यह क्या?
पानी का रास्ता रोकने वाला लोहे का ये भारी गेट कहां से आया?
अरे! लोहे के ये गेट लगातार जमीन में गड़कर एक बांध का निर्माण कर रहे हैं, और पानी को आगे बढ़ने से रोक रहे हैं!
ऐसे गेटों को इतनी जल्दी बनाने और यहां पर लगाने का काम सिर्फ एक ही के बस की बात है...

कहानी 19 पेज से जारी

और वह है शक्ति! लोहे का ये बांध बनाकर तुमने कमाल कर दिया शक्ति! तुमने लाखों और जीवनों को मृत्यु से बचा लिया! पर इतना लोहा तुमको मिला कहां पर?
यहां के रेलवे स्क्रैप यार्ड में! अब ये समुद्री बाढ़ यहां से आगे नहीं जास्गी!
अब हमको अपना सारा ध्यान इस पानी में डूबे लोगों को बचाने में लगाना चाहिस!
मैं तो सोच भी नहीं सकती कि प्रकृति इतनी निर्दयी भी हो सकती है!
ये काम प्रकृति का नहीं है शक्ति! बल्कि इसके पीछे ऐसे प्राणियों का हाथ है जो मानवों को खत्म करके प्रकृति की गोद सूनी करना चाहते हैं!
कैसे प्राणी? क्या किया है इन्होंने?
सब बताऊंगा शक्ति! लेकिन सभी उपलब्ध ब्रह्मांड रक्षकों के सामने! क्योंकि मुझको ऐसा लग रहा है कि ये विनाश, एक महाविनाश की सिर्फ शुरुआत भर है!

और फिर-
पृथ्वी की रिकॉर्डेड हिस्ट्री में आज तक ऐसा विनाश दर्ज नहीं किया गया है! कुछ सुपर हीरोज के प्रयासों के बावजूद करीब ढाई लाख लोग अपनी जान से हाथ धो बैठे हैं!
समुद्र तल पर आए विनाशकारी भूकंप से पैदा हुई सुनामी लहरों की मार को इंडोनेशिया से दक्षिणी अमेरिका के तटों तक महसूस किया गया है!
पर वैज्ञानिकों के अनुसार इस भूकंप ने पृथ्वी के अंदर तक वार किया है! पृथ्वी के 'कोर' का एक भाग टूटकर पृथ्वी के केन्द्र तक पहुंच गया है! और पृथ्वी के द्रव्य की इस फेरबदल के कारण पृथ्वी की धुरी भी बदल गई है और इसके घूमने की गति में भी कुछ बढ़ोत्तरी हुई है। यानी अब पृथ्वी का एक दिन छोटा हो गया है! हालांकि यह बदलाव एक सेकेंड से भी कम का है!
TSUNAMI
यह धमाका कई परमाणु बमों के बराबर था। पृथ्वी पर किसी भी प्राणी के पास ऐसा विनाश कर सकने की क्षमता नहीं है!
अगर तुमने यह सब अपनी आंखों से न देखा होता परमाणु, तो भी हम समझ जाते कि इस आपदा के पीछे किन्हीं ऐसे प्राणियों का हाथ है, जो निश्चित रूप से मानवों का विनाश चाहते हैं!
और ऐसे प्राणी किसी दूसरे ग्रह से ही आ सकते हैं। उनको जल्दी से जल्दी ढूंढना होगा!
डोगा ठीक कह रहा है! उनका अगला वार भी सुनामी जैसा ही होगा। ऐसे वारों से निपट सकने की क्षमता हम मानवों के पास नहीं है। उन प्राणियों को ऐसा कोई भी दूसरा वार करने से पहले ही रोकना होगा। पर हम उनको ढूंढेंगे कैसे?
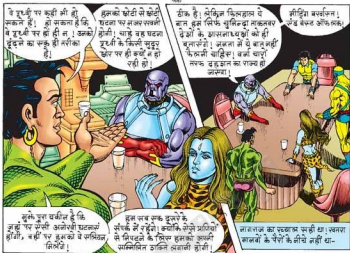
वे पृथ्वी पर कहीं भी हो सकते हैं! हो सकता है कि वे पृथ्वी पर हों ही न! उनको ढूंढने का एक ही तरीका है!
हमको छोटी से छोटी घटना पर नजर रखनी होगी! चाहे वह घटना पृथ्वी के किसी सुदूर छोर पर ही क्यों न हो रही हो!
ठीक है! लेकिन फिलहाल ये बात हम सिर्फ चुनिन्दा ताकतवर देशों के शासनाध्यक्षों को ही बताएंगे! जनता में ये बात नहीं फैलनी चाहिए! वर्ना चारों तरफ दहशत का राज्य हो जाएगा!
मीटिंग बरखास्त! एंड बेस्ट ऑफ लक!
मुझे पूरा यकीन है कि जहां पर ऐसी अनोखी घटनाएं होंगी, वहीं पर हमको वे एलियन मिलेंगे!
हम सब एक दूसरे के संपर्क में रहेंगे! क्योंकि ऐसे प्राणियों से निपटने के लिए हमको अपनी सम्मिलित शक्ति लगानी होगी!
नागराज का ख्याल सही था! खतरा मानवों के पैरों के नीचे नहीं था-
बल्कि सिर पर मंडरा रहा था-
पहला चरण सफलतापूर्वक पूरा हो गया है, काउंसिल!
लेकिन एक चूक भी हो गई है!
तुम जानते हो कि ऐसी किसी भी चूक का अर्थ दो लाख टिबासियों की मौत है! हमारी जाति, हमारे ज्ञान और हमारी सभ्यता का अंत है!
काम में कोई चूक नहीं हुई है, काउंसिल! पर एक मानव ने मुझे देख लिया है!
उसने मुझको कड़ी टक्कर भी दी! अद्भुत वैज्ञानिक शक्तियां थीं उसके पास! पर किस्मत टिबासियों के साथ थी! अंत में मैं सफल हुआ!
अगर एक पृथ्वी वासी को हमारे बारे में पता चल गया है तो समझो कि पूरी पृथ्वी को हमारी भनक लग गई है!

अब हमको दुगुनी तेजी से काम करना पड़ेगा! हम अपने काम में कोई अड़ंगा नहीं चाहते! क्योंकि...हमारी मौत भी ज्यादा दूर नहीं है!
दूसरा चरण पूरा करने की जिम्मेदारी मैं अपने ऊपर लेता हूं!
काऊंसिल तुमको काबिल समझती है, पुल्लासी! पर अभी तुम कमजोर हो! क्या तुम समझते हो कि पृथ्वी पर हमला करने लायक शक्ति तुम्हारे पास है?
हम सभी कमजोर हैं काऊंसिल! अगर कमजोर न होते तो पृथ्वी पर आने की जरूरत ही नहीं थी!
मुझको अपनी सफलता पर पूरा भरोसा है!
और हमको तुम पर भरोसा है, पुल्लासी! जाओ!
पर याद रखना! दो लाख टिबासियों की जिन्दगी तुम्हारे हाथ में है!

हिमालय पर्वत शृंखला, पृथ्वी की सबसे बड़ी और ऊंची पर्वत शृंखला है-
और इसी शृंखला पर है पृथ्वी का सबसे ऊंचा स्थान। हमेशा सफेद बर्फ से ढकी रहने वाली चोटी...

...माउंट एवरेस्ट-
मानव इस बात को नहीं समझते कि पूरी पृथ्वी का मौसम इसी स्थान से संचालित होता है! वर्ना वे यहां पर इतनी गंदगी न करते!

वहां तक आने को मानवों ने अपनी शक्ति और क्षमता का सुबूत देने का जरिया बनाया हुआ है!
अब इनको इसकी दूसरी खासियत का पता चलेगा...

...जब पृथ्वी का एक बड़ा हिस्सा बर्फ से ढक जाएगा! पृथ्वी का तापमान गिर जाएगा और प्रकृति अपना रूप बदलने लगेगी!
अब अपनी योजना का दूसरा चरण मैं आराम से पूरा कर लूंगा!

"क्योंकि इस बर्फीले वीराने में मुझे परेशान करने कोई नहीं आएगा-"

अभी कुछ देर तक तो आसमान साफ था! फिर अचानक ये भारी बर्फबारी कैसे होने लगी?

इंसानों ने मौसम के मिजाज को बिगाड़ दिया है! श श श! डरने की बात नहीं है बर्फिल्ली! तू डर क्यों रही है?

अरे! अरे! ये तो भाग गई?

सिर्फ यही नहीं, सभी शीतनागों की पालतू शीत बिल्लियां घरों से बाहर भाग रही हैं!

पर क्यों?

मैं समझ गया! बिल्लियों में खतरा भांपने की क्षमता नागों से कहीं ज्यादा होती है! वे खतरा भांप गई हैं!

कैसा खतरा?

देखो!

अब हम क्या करें? हमारे पास शीत को सहने और बर्फ को बनाने की शक्ति है! बर्फ को रोकने या पिघलाने की शक्ति नहीं!
हमको राह दिखाने वाला भी कोई नहीं बचा! हमारे राजा वृद्ध हो गए हैं, और शीत नाग कुमार, नागराज के साथ चले गए हैं। अगर जल्दी ही कोई रास्ता न सूझा तो अपने घरों की तरह हम भी बर्फ में समाधि ले लेंगे!
गर्र्र्र्र्र्र
गड़ड़ड़
अरे! ये गड़गड़ाहट की आवाज कैसी है? क्या हिम-स्खलन आने वाला है?
नहीं! ये हिमस्खलन की आवाज नहीं है!
हमारी मौत की आवाज है!
हे भगवान! ये तो हिम बाघ हैं! हमारे जानी दुश्मन! पर ये तो हमारे पूर्वजों के समय में होते थे। और अब ये लुप्त हो चुके हैं!
हां! महादेव ने इनसे हमारी प्रजाति की रक्षा की थी! वे जिस बाघ चर्म पर बैठते हैं वे ऐसे ही किसी बाघ की थी!
इतिहास को बांचना छोड़! वर्ना हम भी इतिहास ही बन जाएंगे! इनसे बचने का रास्ता सोच!
कुछ समझ में नहीं आ रहा है! शीतनागकुमार को बुलाना पड़ेगा! वही हमें बचा सकते हैं!

तेज हवाओं ने बर्फ का रुख पहाड़ों से मैदानी इलाकों की तरफ मोड़ना शुरू कर दिया था-

हर तरफ बर्फ ने विनाश की छाप छोड़नी शुरू कर दी थी-

जम्मू- श्रीनगर राजमार्ग पर-

ये क्या हो रहा है! रास्ता क्यों बंद किया हुआ है?

इस हाइवे पर आगे बनी जवाहर सुरंग का एक हिस्सा बर्फ के दबाव से ढह गया है! उधर से आने वाले यात्री भी फंसे हुए हैं! सड़कों पर भी दो-दो फीट बर्फ जम गई है!

MSUNG MOBILES

लेकिन एकाएक इतनी बर्फ आई कहां से? मौसम विभाग ने तो ऐसी कोई भविष्यवाणी नहीं की थी!

अब भूस्खलन होंगे, हिमस्खलन होंगे! रास्ते बर्फ से ढककर गायब हो जाएंगे! पहाड़ी इलाकों में रहने वाले लोग खाने-पीने और दवाइयों के अभाव में तड़प-तड़प कर मरेंगे!

अगर ये बर्फ जल्दी नहीं थमी तो समझो कि कयामत आ चुकी है!

और वह भी गर्मी के मौसम में!

बर्फ की इस मार ने अपना असर देखते ही देखते पहाड़ों से सैकड़ों किलोमीटर दूर स्थित महानगर तक पहुंचा दिया था-

इतने बड़े-बड़े शॉपिंग बैग लेकर कहां से आ रही हो भारती?

मौसम

विषांक के लिए गर्मियों के कुछ कपड़े लाई हूं! अब अगर इसको शहर में रहना है तो शहरी जैसा दिखना भी चाहिए न!

सही कहा! गर्मियां तो बस आने ही वाली हैं!

VISHAL

Bind

और अब एक नजर आज के मौसम पर! शुरुआत उत्तर से! जम्मू कश्मीर में धूप खिली रहेगी और तापमान लगभग 10 डिग्री तक... एक मिनट! हमारे पास कुछ ताजा खबर अभी-अभी आई है! जम्मू कश्मीर में भारी बर्फबारी से तापमान शून्य से 10 डिग्री नीचे तक सरक गया है! व्हाट इज दिस?

हा हा हा! देखो अपने न्यूज चैनेल का हाल भारती! पढ़ते-पढ़ते ही न्यूज बदल जाती है! वह भी मौसम की!

न्यूज गलत नहीं थी, नागराज! मौसम एकाएक बदल गया है। कमरे के अंदर शायद तुम महसूस नहीं कर पा रहे हो! जरा एक नजर बाहर तो डालो!

ये क्या? मार्च के अंत में महानगर में धुंध छा रही है! आखिर ये हो क्या रहा है!

आऽऽऽह!

क्या हुआ नागराज?

मेरे शरीर में अंदर से दबाव पड़ रहा है! लगता है जैसे कि मेरा शरीर फट पड़ेगा!

पहले ये अभूतपूर्व बर्फबारी और अब लुप्त हिमबाघों का नजर आना! शायद यही वह घटना है जिसका मुझे इंतजार था! मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा, शीतनाग!

ठीक है नागराज! शायद शीतबाघों से तुम ही हमको बचा सको। आओ, रुद्राक्ष की शक्ति हमको पलभर में हिमालय की ऊंचाइयों में पहुंचा देगी!

हमारे शीतवार हिमबाघों को आगे बढ़ने से रोक नहीं पा रहे हैं!
अगर ये आगे आ गए तो गजब हो जाएगा!
शीत नागिनों और शीतपुत्रों में हमारे जितनी शक्ति नहीं है! वे तो अपनी रक्षा तक नहीं कर सकते!
आऽऽऽह!
हे भगवान, मेरा बेटा शीतू बाघ के चंगुल में फंस गया है! मैं बचाऊंगा उसे! घबरा मत शीतू! मैं आ रहा हूं!
मजबूर की पुकार कभी खाली नहीं जाती-
धड़ाक
आऽऽऽह!
कोई बचाओ मेरे बच्चे को!
बर्फ के अंदर से किस शक्ति ने बचाया शीतू को?

नागराज! और शीतनागकुमार भी!
अब आओ, हिमबाघो! आगे बढ़ो! अब हमारे और तुम्हारे बीच में नागराज नाम की दीवार है!
माफ करना नागराज!
रुद्राक्ष शक्ति हमको हमारे निवास स्थान तक तो ले आई लेकिन उसको ये पता नहीं था कि हमारे निवास बर्फ के नीचे दब गए हैं! इसीलिए हम बर्फ के अंदर पहुंच गए!
छोड़ो ये बातें शीतनाग। पहले हमको हिम बाघों से शीतनाग प्रजाति की रक्षा करनी है!
ठीक है, नागराज! तुम इनसे अपनी तरह से निपटो...
... और मैं इनसे अपनी तरह से निपटता हूं, फन शक्ति से!

फन शक्ति!

शीतनागकुमार का घातक फन खुल गया-

और उसमें से नुकीले बर्फीले हथियार निकलकर हिमबाघों से जा टकराए-

परन्तु-

ओह! इनके शरीर बहुत सख्त हैं! शीत अस्त्र इनसे टकराकर चूर-चूर हुए जा रहे हैं!

फन शक्ति की दूसरी शक्ति का प्रयोग करना पड़ेगा!

तो तेज हवा की लहरों ने हिमबाघों के पैर जमीन से उखाड़ दिए-

इस बार जब फन बंद होकर दुबारा खुला-

वाह शीतनागकुमार! तुमको सचमुच मेरी मदद की जरूरत नहीं थी! तुम अकेले ही इस मुसीबत से निपटने के लिए काफी हो!

पर सवाल ये है कि लुप्त हो चुकी प्रजाति के प्राणी हिमबाघ अचानक पैदा कहां से हो गए?

ये मौसम में अचानक हुए बदलाव के बाद पैदा हुए हैं, नागराज! मौसम के बदलने और इनके पैदा होने में कुछ संबंध अवश्य है!

लेकिन इस संबंध का पता हम तभी लगा सकते हैं, जब हम हिमबाघों के पंजों से जिन्दा बच सकें!
देखो, उन्होंने हम तक पहुंचने का एक नया रास्ता ढूंढ लिया है!
ओह! वे चट्टानों को लुढ़काकर उसकी आड़ में तेज हवा से बचकर हमारी तरफ बढ़ रहे हैं!
अब मेरे पास ऐसी कोई फन शक्ति नहीं है, जो हमें बचा सके!
फिर तुम पीछे हट जाओ शीतनागकुमार! और मुझे इनसे नागशक्तियों की मदद से निपटने दो!
इनका रास्ता अब विषफुंकार का बवंडर रोकेगा!
फ्रूऊऊ
अरे! ये तो फुंकार के बवंडर को पार करके बढ़ते चले आ रहे हैं!
इसीलिए तो ये हमारे सबसे खतरनाक दुश्मन हैं नागराज! विष इन पर बेअसर है!
फिर तो ध्वंसक सर्पों से इनका विनाश करने के अलावा और कोई चारा ही नहीं बचा है!
मुझे इन लुप्त जीवों को मारने में दुख तो होगा, पर और कोई रास्ता है भी तो नहीं!
ध्वंसक सर्पों की मार ने हिमबाघों के बढ़ते कदमों को रोक दिया-

परन्तु ज्यादा देर तक ये उपाय काम नहीं आ पाया-
ये क्या? ये बर्फ के गोलों का प्रयोग करके ध्वंसक सर्पों को बीच में ही रोक रहे हैं!
ऐसा लगता है जैसे कि ये मानवों को और उनके वारों को अच्छी तरह से जानते हैं! इसीलिए इनको न तो हमारा डर है और न ही हमारे वारों का! पर ऐसा कैसे हो सकता है!
ये हिमबाघ तो मानव के धरती पर आने से पहले ही लुप्त हो चुके थे! फिर ये मानवों को भला कैसे जान सकते हैं?
नागराज को ज्यादा सोचने का मौका नहीं मिला-
घप
क्योंकि हिमबाघों की फौज अब उसके पास तक आ चुकी थी-
आऽऽऽह! ये तो मुझे काटने के बाद भी नहीं गलेंगे!
क्योंकि इनके दांत इतने लंबे हैं कि मेरा विषैला रक्त इनके मुंह के अंदर जाएगा ही नहीं!
पर नागराज के रक्त में विष के अलावा और कुछ भी था-
और वे थे सूक्ष्म सर्प-
जो हवा के संपर्क में आते ही बड़ा रूप धारण करने लगते थे-
सर्पों ने बाघ का मुंह सिल दिया-
और नागराज को उसे दूर फेंकने का मौका मिल गया-
अब खालिस ताकत का इस्तेमाल करना पड़ेगा! नागवारों से इनको बेहोश करना पड़ेगा! पर पता नहीं मैं ये काम कर भी पाऊंगा या नहीं!

कहानी 35 पेज से जारी

क्योंकि ये संख्या में बहुत ज्यादा हैं, और बार खा-खाकर भी आगे बढ़ते आ रहे हैं!
नागराज विशालकाय हिमबाघों की फौज से अकेला लड़ रहा था-
और शीतनाग दूर से मदद करने के अलावा और कुछ भी नहीं कर सकते थे-
नागराज के शक्तिशाली वारों से हिमबाघों के शरीर अंदर तक हिले जा रहे थे-
वैक
आऽऽऽह! ये क्या है?
पता नहीं! नागराज का घूंसा खाकर किसी हिम-बाघ के पेट से यह निकला है!
पर ये तो मेरा प्यारा रुद्राक्ष गुड्डा है!
वही जिसको तो हमारी पालतू बर्फिल्ली ने निगल लिया था! पहले यह बर्फिल्ली के पेट में था अब हिमबाघ के पेट में है! यानी... यानी बाघ ने बर्फिल्ली को निगल लिया है!

मैं इस हिमबाघ को नहीं छोड़ूंगा! इसने बर्फिल्ली को खाया है! मैं इसका पेट फाड़ डालूंगा!
संभालो! रुक जा बेटा!
ये ले! ये ले! अब खाएगा किसी बिल्ली को!
गर्र्र्र्र
नागराज!
ये क्या कर रहे थे बच्चे! मरना चाहते थे क्या?
ये बाघ बहुत गंदा है, नागराज! इसने मेरी बिल्ली को खा लिया है!
देखो न! इसके पेट में से वही गुड्डा निकला है जो बिल्ली ने निगला था!

नहीं शीतनागकुमार! बिल्लियाँ हिमबाघों का भोजन नहीं बनी हैं! बल्कि वे खुद हिमबाघ बन गई हैं!
यह तो असंभव है! ऐसा भला कैसे हो सकता है?
पर यह हुआ कैसे?
यह बाद में सोचेंगे! पहले ये बताओ कि ये बिल्लियां किस चीज से सबसे ज्यादा डरती थीं?
केंचुली से बने चाबुकों से! उसे देखते ही बर्फिल्ली, बिल्ली से बर्फ की सिल्ली बन जाती थी!
क्योंकि इनमें से कुछ हिमबाघों की गर्दनों में टूटे पट्टे अटके हुए हैं! वैसे ही जैसे कि पालतू पशुओं की गर्दनों में होते हैं!
बिल्लियां ही विकसित होकर हिमबाघ बन गई हैं!
तो फिर सुनो मेरी योजना!
बाघ फिर से हमारी तरफ आ रहे हैं!
नागराज वापस क्यों नहीं आया?
हमारे लिए वह अपनी जान भला खतरे में क्यों डालेगा?
क्योंकि वह एक रक्षक है! ब्रह्मांड रक्षक! लो आ गया नागराज!
हिमबाघों का रास्ता फिर से रोकने के लिए!

अब मुझको सबकुछ नई योजना के अनुसार करना पड़ेगा! और उस योजना का पहला कदम इन सभी बाघों को एक जगह पर इकट्ठा करना है!
अब ये सारे बाघ एक साथ मुझ पर टूटने के लिए तैयार हैं!
हिमबाघ, नागराज पर एक साथ टूट पड़े-
पर तब तक नागराज अपनी जगह से गायब हो चुका था-
और बाघ घिर चुके थे-
चटाक
चट्टट्ट
ये खूंखार हिमबाघ तो एकाएक भीगी बिल्ली बन गए! पर कैसे?
क्योंकि ये हमारी भीगी बिल्लियां ही हैं! हमारी पालतू बिल्लियां! और इसीलिए केंचुली चाबुक की फटकार ने इनको सीधा कर दिया है!

ये तो असंभव है! पर इनकी हालत को देखकर ये बात सच लग रही है!
लेकिन ये चाबुक तो हमारे घरों में थे और हमारे घर बर्फ में दब चुके हैं! फिर ये केंचुली चाबुक कहां से आए?
नागराज के सर्पों ने बर्फ की घातक ठंडक का सामना करते हुए इनको बर्फ में घुस-कर ढूंढ़ा है!
नागराज के सांप भी नागराज की तरह ही बहादुर हैं!
इनका रूप बदल सकता है, ये खूंखार हो सकते हैं, पर इनके दिल में छुपा डर नहीं जा सकता!
पर सवाल ये है कि इनका रूप कैसे बदला?
बिल्लियां किस दिशा में गई थीं?
इसका सवाल हमको उसी दिशा में मिलेगा, जिस दिशा में ये बिल्लियां भागी थीं!
और कुछ ही देर बाद-
आश्चर्य की बात है! जिस तरफ बिल्लियां डरकर भागी थीं, उसी तरफ से बर्फीली हवाएं भी आ रही हैं! और अगर मेरा ख्याल गलत नहीं है तो मैं माऊंट एवरेस्ट से ज्यादा दूर नहीं हूं!
और हालात बता रहे हैं कि इस गड़बड़ी का केन्द्र माऊंट एवरेस्ट ही है! पर ये तेज बर्फीला तूफान...
...मुझको वहां तक पहुंचने नहीं देगा!

बचो नागराज!
शुक्रिया, शीतनाग कुमार! पर सिर्फ बचने से कुछ नहीं होगा! हमको एवरेस्ट तक पहुंचना ही है!
इस मौसम में तो एवरेस्ट तक मानव या उनका कोई यंत्र तो क्या, हम तक नहीं पहुंच सकते! हमको मौसम के सुधरने का इंतजार करना पड़ेगा!
हमको एवरेस्ट तक पहुंचना ही होगा, और मौसम के एकाएक बिगड़ने का कारण ढूंढ़ना पड़ेगा! पर तुम मेरे शरीर में फिर से घुस जाओ! वर्ना मुझसे ये ठंड सही नहीं जाएगी!
नहीं, शीतनाग! मुझे आभास हो रहा है कि ये मौसम तभी सुधरेगा, जब मानव विनाश के कगार पर पहुंच चुके होंगे!
पूरी दुनिया के वातावरण का तापमान तेजी से गिरता जा रहा था-
और दुनिया बर्फ की चादर से ढकती जा रही थी-
और विनाश फैलाने वाले भी दूर नहीं थे-
पुल्लासी ने कमाल कर दिया! अब पृथ्वी का तापमान हमारी इच्छा के अनुसार होने ही वाला है!
विनाश की घड़ी अब ज्यादा दूर नहीं थी-
समय बिल्कुल नहीं है! अब हमको योजना के तीसरे चरण पर काम शुरू कर देना चाहिए!
ठीक है! 'टेरा-प्लानटेशन तैयार करो!
मानवों का अस्तित्व मिटना तय था-

और उसको रोक सकने वाला एकमात्र शरूम सफलता से अभी भी बहुत दूर था-
आऽऽऽह! पहले हम शिखर से दो किलोमीटर दूर थे! अब ढाई किलोमीटर दूर हैं!
हम आगे बढ़ने के बजाय पीछे फिसल रहे हैं!
नागराज के आने का आभास पुल्लासी को भी हो चुका था-
आश्चर्य है! एक मानव प्रकृति के इस भीषण रूप से लड़ता हुआ यहां तक आने की कोशिश कर रहा है! हालांकि एक मानव मेरे लिए कोई खतरा नहीं बन सकता! लेकिन फिर भी मैं उसको अपनी शक्ल देखने का मौका नहीं दूंगा। शक्तियां और बढ़ानी होंगी!
हवाएं और तेज हो रही हैं नागराज!
अब तो ये चट्टानें उड़ाकर ला रही हैं!
वापस चलो! एवरेस्ट तक पहुंचना असंभव है!
और तुम भी असंभव को संभव नहीं बना सकते!
अगर मैं असंभव को संभव नहीं बना सकता शीतनाग कुमार...
...तो मुझको ब्रह्मांड रक्षक होने का दावा भी छोड़ देना चाहिए!
और ये दावा मैं किसी भी कीमत पर छोड़ नहीं सकता!
नागराज अपने निर्णय पर अडिग था। और प्रकृति की शक्तियां अपने निर्णय पर-
नागराज का सफल हो पाना सचमुच असंभव था-
उस मानव का कोई निशान नहीं मिल रहा है! तूफान ने उसको उठाकर कहीं दूर पटक दिया है!
अब वह यहां तक आने का ख्याल अपने सपनों तक में नहीं लाए... अरे! अरे!
पत्थर ऊपर उठ रहे हैं!

आऽऽऽऽ ह!
तुम बर्फीले तूफान को हराकर यहां तक कैसे पहुंच गए मानव ?
परमाणु की बात सुनने के बाद मुझे यकीन हो गया था कि इस आपदा के पीछे भी प्रकृति का कोई हाथ नहीं है! इसीलिए इसको सामने देखकर भी मुझे कोई आश्चर्य नहीं हो रहा है!
सिर्फ एक मानव नहीं, मानव नाग नागराज हूं मैं!
और तुम तक पहुंचने के लिए मुझको बर्फीले तूफान से लड़ने की जरूरत नहीं पड़ी!
प्रकृति से लड़ने की शक्ति मुझमें भी नहीं है! इसीलिए मैंने प्रकृति के कहर से बचने के लिए प्रकृति की ही मदद ली!
और प्रकृति द्वारा रचे गए पत्थरों की दरारों के बीच में होता हुआ मैं पहाड़ के अंदर- अंदर ही तुम तक पहुंच गया! और ये रास्ता बर्फीले तूफान से एकदम सुरक्षित था!
तुम अपनी मौत तक पहुंच गए हो नागराज! मैं ऐसा चाहता तो नहीं, पर तुमने यहां पहुंचकर मेरे सामने और कोई रास्ता छोड़ा ही नहीं है!
तुमको मरना ही होगा!

आऽऽऽह! बर्फीली आंधी के शरीर वाला दैत्य! इसे तुमने कैसे पैदा किया? पर... पर तुम हो कौन? और मानवों का विनाश करके आखिर तुम हासिल क्या करना चाहते हो?
हमारा मकसद मानवों को मारना नहीं, बल्कि खुद को बचाना है!
और मेरा ख्याल है कि फिलहाल तुम्हारा मकसद भी यही होना चाहिए!
ओह! एवरेस्ट की चोटी अभी तक तो तूफान का केन्द्र थी! और चारों तरफ तूफानी हवाएं बहने के बावजूद तूफान का केन्द्र काफी शांत होता है!
पर अब इस केन्द्र में एक नया तूफान बह रहा है! और मैं अपनी और मानवों की मौत को अपनी आंखों के सामने देख रहा हूं!
आऽऽऽह! आरी जैसे दांतों वाले ये पत्थर मेरे टुकड़े-टुकड़े कर सकते हैं!
और मेरे वारों का इस पर कोई असर नहीं हो रहा है!

दुश्मन का आकार बहुत बड़ा था और बचने की ज्यादा जगह नहीं थी-
आऽऽऽह!
अगर इसने मुझको चोटी से नीचे फेंक दिया तो इच्छाधारी शक्ति भी मुझको शायद बचा नहीं पाएगी!
नागराज बचने के अलावा कुछ कर भी नहीं सकता था-
लेकिन बचते रहने की भी एक सीमा थी-
धारदार चट्टानी टुकड़े नागराज को घाव लगाते चले गए-
और नागराज को घूमते बवंडर की बांहों ने अपने अंदर समेटकर उठा लिया-
आऽऽऽह! ये बवंडर मेरे फेफड़ों से हवा खींच रहा है!
मेरा दम घुट रहा है!
कुछ करो नागराज! जल्दी!

पर तुम कर भी क्या सकते हो? हवा से भला कोई लड़ पाया है!
इस पर शीत अस्त्रों से वार नहीं करना है, शीतनागकुमार! बल्कि इस बवंडर में मौजूद जलकणों पर शीत शक्ति का प्रयोग करके उसको जमा देना है!
समझ गया, नागराज!
अगर इसका शरीर हवा का न बना होता तो...
शीतनाग! इससे लड़ने के लिए तुमको बर्फीली शक्ति का प्रयोग करना पड़ेगा!
पर फायदा क्या होगा? जैसे तुम्हारे नागवार इसके आर-पार हो गए वैसे ही मेरे शीत वार बेअसर हो जाएंगे!
शीतनाग की शीत शक्तियां बवंडर दैत्य के अंदर मौजूद जलकणों को तेजी से जमाने लगीं-
और हवा से बना उसका शरीर ठोस होता चला गया-
अब नागराज के वार उसके शरीर पर बेअसर नहीं थे-
इसको पृथ्वी पर कहते हैं कि 'मियां की जूती, मियां के ही सिर!'
आऽऽऽह!
अब बंद करो ये विनाश!
कभी नहीं!

तुम जानते नहीं हो नागराज कि तुम किससे उलझ रहे हो!
हम ऊर्जा पर जीने वाले प्राणी हैं! अपने शरीर में हम उतनी ऊर्जा एक पल में पैदा कर सकते हैं, जितनी ऊर्जा का प्रयोग पृथ्वी का एक पूरा नगर एक साल में करता है!
और इस ऊर्जा का एक स्पर्श तुमको खाक करने के लिए काफी है!
यानी अगर मैं इसको अभी किसी तरह से काबू में कर लूं तो तूफान थम सकता है!
पर ये काम बहुत मुश्किल है! इसको काबू में करने के लिए मुझे इसको छूना पड़ेगा, और मैं ऐसा नहीं कर सकता!
या शायद... कर सकता हूं!
ओह! इसका पूरा शरीर ऊर्जा से चमकने लगा है! पर इसके ऐसा करते ही तूफान हल्का पड़ने लगा है! यानी ये अपनी ऊर्जा से ही इस भीषण तूफान को पैदा कर रहा था!
शक्ति का वह अद्भुत नजारा देखकर परग्रही की आंखें भी फटी रह गईं–
और फिर- फटी ही रहीं–

ओफ़! जुल्मासी अपनी ही शक्ति से पैदा किए तूफान में फंस गया है! तूफान से निकलने के लिए उसको अपनी ऊर्जा समेटनी ही पड़ेगी!
TEMPORA
वह काफी कमजोर हो चुका है कांउसिल! उसको वापस बुलाना ही उचित होगा! वैसे भी उसने अपना काम कर दिया है!
"ठीक है! अब पृथ्वी हमारे तीसरे चरण के लिए एकदम तैयार है-"
"तो इनका मकसद पता चल सकता था-"
आहा! बादल छंट रहे हैं और सूरज फिर से नजर आ रहा है।
पर सूर्य सुबह के नौ बजे आमतौर पर इतना चमकीला और गर्म तो नहीं होता है!
अब ठंड भी कम हो रही है!
SPORTS
तूफान गायब हो गया है शीतनाग! और उसके साथ वह प्राणी भी! पर वह था क्या?
उससे भी ज्यादा जरूरी यह जानना है कि इसका मकसद क्या था? काश, हम इसको पकड़ पाते!
कभी सुबह नौ बजे उठा करो तो पता चले! सूर्य एक दिन में बदल तो नहीं सकता!
ए! मैं रोज सुबह छः बजे उठकर एक्सरसाइज करती हूं! और तुम्हारा सूरज से क्या मतलब?

सुबह चार बजे घर आने वाले और नौ बजे सोकर उठने वाले को तो ये भी पता नहीं होगा कि सूरज जब उगता है तो लाल होता है!
बंदर के मुंह की तरह लाल! जैसा कि गुस्से में अभी तेरा मुंह हो रहा है! देख, देख तेरी नाक भी आगे से काली हो रही है!
सुबह... मेरा मतलब नौ बजे उठकर मुंह धोया भी है या नहीं?
फॉर योर काइंड इंफॉर्मेशन मैं नहा भी चुकी हूं! पर तुम बताओ ये ड्रेस पहने-पहने सो जाते हो क्या?
और जरा दादी दाढ़ी भी बना लिया करो!
किसी चोर के पीछे ऐसे भागोगे तो वह तुमको अपना भाई समझकर चोरी का माल बांटने लगेगा!
दादी! मैं नहा भी चुका हूं और दाढ़ी भी बना चुका हूं! पर... पर लगता है कि ब्लेड की धार खराब थी!
ये क्या गड़बड़ है? मैंने तो खींच खींचकर उल्टी दाढ़ी बनाई थी! पर दो घंटे के अंदर ये बाल कैसे उग आए?
हो गई न बोलती बंद! अब जाओ, कम से कम ब्रश करके शुरुआत तो करो!
मैं तो चली पौधों को पानी देने!
ब्रश! ब्रश तो मैंने किया है! लेकिन फिर भी दांत पीले और गंदे क्यों लग रहे हैं?
और दाढ़ी फिर से कैसे उग आई? लगता है आजकल ब्लेड और टूथ-पेस्ट की क्वालिटी भी गिर गई है!
या बात कुछ और ही है! कहीं यही वह अजीब घटना तो नहीं है जिसका मैं इंतजार कर रहा हूं!
पर मेरी दादी और अजीब घटना में भला क्या संबंध हो सकता है?

संबंध था और वह जल्दी ही सामने आने वाला भी था-
मैंने कल ही तो इन पौधों की कटिंग की थी। फिर ये एकदम से कैसे बढ़ गए? शायद मैंने ठीक से कटिंग नहीं की थी!
... मेरी हालत खराब हो जाती!
पर बाकी पौधे भी काफी बड़े लग रहे हैं! खैर चलो, आज मैं पानी देने के बजाय पौधों की कटिंग कर देती हूं!
शुक्र है कि ये पौधे बड़े लग रहे हैं! कहीं इन पर बैठने वाले कीड़े भी इनकी तरह होते तो...
हालत... खराब...
भइया!
श्वेता! घबरा मत! मैं आ रहा हूं!
लेकिन अगर मेरी याददाश्त सही है तो यह कीड़ा वही है जिसके बारे में मैंने कुछ महीनों पहले नेशनल ज्योग्राफिक मैगजीन में पढ़ा था!
शायद यही वह मुसीबत है जिसकी आशंका मुझको थी!

ये कीड़ा जुरासिक काल के अंतिम समय में पाया जाता था! और हरियाली के अभाव में लुप्त हो रहे डायनासौरों का यह प्रिय भोजन था! पर इसके इस तरह से एकाएक दिखने का क्या अर्थ हो सकता है?
श्वेता! कैंची से इसका पैर काट दो!
ख च
आऽऽऽह! थैंक्स फार द आइडिया, भइया!
वैसे तो ये आइडिया मुझे भी आया था!
पर ऐसा करके मैं अपने चंडिका होने के शक को हवा दे देती! अब श्वेता जाएगी...
और चंडिका आएगी!

चक
तड़क
इस कीड़े से निपटना इतना आसान नहीं होगा! ओफ़्! मैं कीड़ा किसको कह रहा हूं! इसके सामने तो मैं कीड़ा नजर आ रहा हूं!
आऽऽऽह! इस कीड़े में तो डंक होने के साथ-साथ मकड़ी जैसे गुण भी हैं! इसने मुझको अपने जाले में फंसा लिया है!
एक मिनट, एक मिनट! तुम कीड़ों में जरा भी तमीज नहीं होती है! अरे खाना खाने से पहले कुछ 'एपेटाईजर' खाए जाते हैं! जैसे पतला सूप!
चंडिका! पता नहीं क्यों मुझे लग रहा था कि श्वेता के जाते ही तुम जरूर आओगी!
और अब ये मुझे कीड़ा समझकर खाने जा रहा है!
शक का इलाज तो हकीम लुकमान के पास भी नहीं था!
वैसे इतनी लंबी बात के बजाय सिर्फ थैंक्स कह देते तो भी काम चल जाता!

अब बेकार की बातों में समय और ज्ञान मत गंवाओ! मैं पानी की धार से इसका ध्यान बंटाती हूँ और तुम इसको बेहोश करने की कोशिश करो!
मारने की क्यों नहीं?
लेकिन मेरे पास एक दूसरा तरीका भी है!
क्योंकि वह शायद तुम्हारे बस की बात नहीं है!
मेरे वार इस पर असर नहीं डाल पा रहे हैं, चंडिका!
इसकी खाल हड्डी जैसी सख्त है!
फिलहाल मेरे पास ऐसी कोई चीज नहीं है जिससे मैं इसको बेबस कर सकूं!
पर इसके पास वह चीज जरूर है!...
और जब ध्रुव रुका तो वह कीड़ा उड़ना भूल चुका था-
... जो इसको बांध सके! और वह चीज है इसके जाले!
ध्रुव का कलाबाज शरीर पेड़ के इर्द-गिर्द घूमता चला गया-
अब मुझे कैंची दो!
जाले, रबर-बैंड की तरह खिंचते चले गए-
कुछ ही पलों के बाद-
आश्चर्य की बात यह है कि यह कीड़ा आया कहां से?
जहां से भी आया हो, पहले मैं इस पर कीटनाशक की पूरी कैन स्प्रे कर दूं! कहीं ये आजाद हो गया तो!

अच्छा किया! अब इस कीड़े को मैं 'बायो-लैब' में ले जाता हूं! वही इसका परीक्षण करके यह बता सकते हैं कि...
...ओह! कमांडो हैडक्वार्टर से सिग्नल आ रहा है!
यस, करीम!
कैप्टेन! हम पर हमला हो रहा है...
कमांडो हेडक्वार्टर टूट चुका है! ह... हम खतरे में हैं!
हमला! कैसा हमला! किस चीज का हमला?
पेड़ों का कैप्टेन! और ये हमला पूरे राजनगर में तेजी से फैलता जा रहा है!
अजीब-अजीब से बड़े कीड़े और प्राणी नज़र आ रहे हैं!
अब...
ओहह! संपर्क टूट गया! शायद तार टूट गए हैं!
हर तरफ से मानवता पर हमला हो रहा था-

विशालकाय और अजीबोगरीब पेड़ों की कतारें, राजनगर को एक आधुनिक शहर से प्राचीन जंगल में बदल रही थीं-
और साथ ही साथ ऐसे प्राचीन जानवर भी प्रकट होते जा रहे थे जिनको दुनिया ने अब तक विलुप्त प्रजाति का नाम दिया हुआ था-
ओ माई गॉड! ओ माई गॉड! ये क्या हो रहा है? ये कैसा जानवर है!
होश काबू में रखो, केडेट करीश! हमको ऐसे ही खतरों से निपटने की ट्रेनिंग दी गई है! और इस वक्त ये हमारा फर्ज है कि हम जनता को इस मुसीबत से बचाएं! अपनी जान पर खेलकर!
यू आर राइट, रेणु! पर जनता की जान बचाने के लिए पहले हमको अपनी जानें बचाकर रखनी होंगी!

और यह काम आसान नहीं लगता है!
हर काम आसान होता है पीटर! फर्क सिर्फ इतना है कि कोई काम ज्यादा आसान होता है और कोई काम कम आसान!
इससे बचने के तीन तरीके हैं! मार डालना, काबू में करना या भगा देना!
मार डालने लायक हथियार हमारे पास नहीं हैं और भगा देने लायक शक्ति नहीं है! पर हमारे पास काबू में करने लायक दिमाग जरूर है!
हमको इसकी गर्दन में फंदा डालना होगा! यह जानवरों को काबू में करने का टॉप-मोस्ट आइडिया है!
और हमें ऐसा करने के लिए इसके पास पहुंचना होगा! इन बढ़ते पेड़ की डालों के बीच में से फंदा फेंक पाना असंभव है!
तो फिर हमको इसके पास पहुंचना होगा!
और-
वह प्राणी लड़खड़ा कर गिरा

गुड रेणु! ग्रेट बैक फ्लिप! अब ये किसी को नुकसान नहीं पहुंचा सकता! पर ये पेड़ और ऐसा प्राणी, ये सब आए कहां से हैं?

पेड़ों का तो मुझे पता नहीं, पीटर...

...लेकिन इस प्राणी की कमर पर एक निशान है! राजनगर रेसकोर्स का। और यह वह निशान है जो रेस में भाग लेने वाले घोड़ों पर लगाया जाता है!

पर ये इसकी कमर पर कैसे आया?

...तो इसके जैसे और घोड़े भी इसी रूप में आ सकते हैं!

मेरा शक सही था रेणु! हम मुसीबत में हैं!

कुछ सोचो रेणु! ये सब हमारी तरफ बढ़ रहे हैं!

और इनके इरादे नेक नहीं लगते! सोचो, कैप्टेन ध्रुव यहां पर होता तो वह क्या करता।

पर कैप्टेन इस मुसीबत से अंजान क्यों है? वह इस वक्त है कहां?

मुझे इस मुसीबत का पता है, पीटर! और सच पूछो तो मुझको खुद भी पता नहीं है कि इस मुसीबत से निपटने के लिए मैं क्या करूं!
पूरा राजनगर जंगल बनता जा रहा है! प्रागैतिहासिक काल के प्राणी नजर आ रहे हैं! बिजली फोन की सेवाएं ठप्प पड़ गई हैं! घर टूट चुके हैं! लगता है कि हम हजारों साल पहले की दुनिया में पहुंच चुके हैं!
तुम ठीक समझ रहे हो कैप्टेन! ये प्रागैतिहासिक प्राणी रेस-कोर्स के घोड़े हैं! इनके ऊपर रेसकोर्स के चिन्ह लगे हैं! और अगर मुझको सही तरह से याद है तो ये रूप घोड़ों के पूर्वजों का रूप है जो करोड़ों वर्ष पहले पृथ्वी पर पाए जाते थे!
यानी घोड़े अपने पूर्वजों के रूप में बदल गए हैं! नागराज का जब मैसेज आया था तो वह भी ऐसा ही कुछ कह रहा था...
...कि बिल्लियां ऐसे बाघों के रूप में बदल गईं जो लाखों वर्षों पहले बर्फीले पहाड़ों पर पाए जाते थे! और पृथ्वी का रूप भी करोड़ों वर्षों पहले वाला हो रहा है!
जब पृथ्वी का अधिकांश हिस्सा मानव निर्मित शहरों से नहीं, बल्कि हरियाली से ढका हुआ था!

हम भूतकाल की तरफ जा रहे हैं कैडेटो! प्रकृति का चक्र उल्टा चलने लगा है!
यानी... अगर डार्विन की थ्योरी सही है तो हम भी...
... बंदरों में बदल जाएंगे!
ओ माई गॉड! कैप्टेन तुम्हारा चेहरा!
और तुम्हारा भी रेणु! शायद पूरी मानव जाति का!
बदलाव शुरू हो चुका है! इंसान बंदर बनने के रास्ते पर चल पड़ा है!
हम सब बंदर बन जाएंगे! पर क्यों? प्रकृति ऐसा क्यों चाहती है! उसने ही तो बंदर को विकसित करके इंसान बनाया है! फिर वह अपना चक्र उल्टा करके इंसान को बंदर क्यों बना रही है?
ये काम प्रकृति का नहीं है! ब्रह्मांड रक्षकों के पास मौजूद जानकारी के अनुसार यह काम दूसरे ग्रह के प्राणियों का है!
पर... पर वे ऐसा क्यों करेंगे? इससे उनका क्या फायदा?
हमको बंदर बनाकर उनको क्या मिलेगा?
पृथ्वी ग्रह पर कब्जा! एक हरे-भरे ग्रह पर कब्जा! और वह भी बिना लड़े!
ये क्या कह रहे हो, कैप्टेन! इतिहास गवाह है कि मानवों ने परिस्थितियों से लड़कर हमेशा विजय प्राप्त की है! हार नहीं!
हम जैसे-जैसे बंदर बनते जाएंगे, वैसे-वैसे हमारी सोचने की क्षमता भी कम होती जाएगी। बुद्धि कमजोर होती जाएगी।
मानवों ने पीटर! बंदरों ने नहीं!

और फिर हम परग्रहियों से तो क्या, पृथ्वी के जानवरों से मुकाबला करने लायक भी नहीं रहेंगे! परग्रही बिना लड़े ही पृथ्वी को जीत जाएंगे! और उस पृथ्वी पर न तो मानव रहेंगे और न ही मानव निर्मित कोई चीज!
और ऐसा होने में ज्यादा वक्त नहीं है! कम से कम दो-तीन मानव तो तुरंत खत्म होने वाले हैं!...
ये तो मैमोथ है! हाथियों का हिमयुग के जमाने वाला पूर्वज! ये जरूर राजनगर के पास वाले जंगलों से आया है!
...क्योंकि इस मुसीबत पर रेणु का न तो मारने वाला तरीका काम आएगा, न काबू में करने वाला और न ही भगाने वाला!
घबराओ मत कैडेटो! इस वक्त हमारा दिमाग चाहे कमजोर हो रहा हो, पर बंदर बनने से हममें फुर्ती जरूर पैदा हो रही है!

हम इस पर भी काबू पा लेंगे!
ओह! इस पर तो मेरे वार का उतना ही असर हो रहा है जितना कि टैंक पर कंकड़ मारने से होता है!
थैंक्स डोगा! बस यही एक ऐसा काम है जो मैं नहीं कर सकता!
मुझको तो नहीं लगता कि मेरी स्टार-लाइन भी इसको बांधने में कामयाब होगी!
इसका इलाज तो सिर्फ एक ही है!
भारी बारूदी हथियारों का वार!
धांय
तो चिन्ता कैसी ध्रुव? डोगा है न!
पर तुम एकाएक यहां पर कैसे? मेरी जानकारी के अनुसार तो ऐसी मुसीबत मुंबई में भी आई है!
आई है ध्रुव! पर इस मुसीबत की जड़ यहीं पर है! राजनगर में!

मैं कुछ समझा नहीं डोगा! समस्या की जड़ से क्या मतलब है तुम्हारा?
...कि वह बंदर में बदलता जा रहा है!
जैसे तुम और हम!
और किसी को भी इस स्थिति से निपटने का उपाय सूझ नहीं रहा है!
मेरा दिमाग भी कुछ सोच नहीं पा रहा है! शायद ऐसा मेरे शरीर में हो रहे बदलावों के कारण हो रहा है! अगर दूसरे ब्रह्मांड रक्षक भी यहां होते तो...
सभी ब्रह्मांड रक्षक यहीं आ रहे हैं! पर इसका हल तुमको ढूंढ़ना ही होगा ध्रुव!
समस्या की जड़ का संबंध पेड़ की जड़ों से है! सेटेलाइट फोटोग्राफ्स के अनुसार ये पेड़ इस इलाके से उगना शुरू होकर पूरी पृथ्वी पर फैल रहे हैं!
पूरी दुनिया में प्रागैतिहासिक काल के जानवर नजर आ रहे हैं! दुनिया पाषाण युग की तरफ जा रही है! और हर इंसान इस बात से आतंकित है...
वर्ना इंसानों के साथ-साथ देवताओं का संपर्क भी पृथ्वी से हमेशा के लिए टूट जाएगा! मुझको भी वापस देवलोक जाना पड़ेगा!
ये तुम क्या कह रही हो शक्ति?
ऐसा भला क्यों होगा?
देवता इंसानों की भक्ति पर जीते हैं! वही उनकी ऊर्जा हैं! जब इंसान ही नहीं रहेंगे तो देवों को अपनी भक्ति ऊर्जा कहीं और से ढूंढ़नी होगी!
और जहां तक मेरी बात है मैं इंसानी शरीर में वास कर सकती हूं, पर बंदरों के शरीर में नहीं! चंदा के बंदर बनते ही मुझे उसका शरीर छोड़ना पड़ेगा!

यानी अगर ये विनाश जारी रहा तो पृथ्वी पर न तो इंसान रहेंगे और न ही देवता!

शायद पशु भी नहीं रहेंगे! अगर प्रकृति का यह चक्र उल्टा चलता ही रहा तो हम सब विकास के प्रथम चरण पर जाकर ही रुकेंगे! यानी अमीबा पर!

ब्रह्मांड रक्षकों के रहते ऐसा कभी नहीं होगा! देखो! यह बदलाव पेड़ों के पैदा होते ही तेजी से होने लगा है! पहले हमको पेड़ों को बढ़ने से रोकना होगा!

और फिर मुसीबत की जड़ को ढूंढना होगा!

क्लू तो परमाणु ने हमको दे दिया है! इस समस्या की जड़ हमको पेड़ की जड़ों में मिलेंगी!

मैं कुछ समझा नहीं!

जैसा कि परमाणु ने और तुमने, दोनों ने ही देखा कि समुद्र के नीचे और पहाड़ों की ऊंचाई पर गड़बड़ी फैलाने के लिए परग्रही खुद मौजूद थे!

इससे सिद्ध होता है कि बगैर घटनास्थल पर मौजूद रहे वे गड़बड़ी नहीं फैला सकते!

अब अगर गड़बड़ी यहां से फैली है तो वे यहां पर भी मौजूद होंगे!

ब्र. र. = ब्रह्मांड रक्षक

पर उनकी यह कोशिश अनदेखी नहीं गई थी-
ये मानव हमारे लिए खतरा बन सकते हैं! हम अभी भी अपने लक्ष्य से एक घंटे की दूरी पर हैं! अभी पृथ्वी को दो करोड़ साल पीछे जाना बाकी है! इनको रोकना होगा!
इनको रोकने के लिए टेरा प्रोजेक्ट काफी है! वैसे भी ये मानव विकास की उल्टी दिशा में बढ़ रहे हैं! इनका दिमाग हर पल कमजोर होता जा रहा है! ये बंदर बन रहे हैं! और बंदरों का दिमाग हमारे अतिविकसित मस्तिष्क का सामना नहीं कर सकता!
मैं उम्मीद करता हूं कि आपकी सोच सही हो, काउंसिल! क्योंकि अगर ये सोच गलत हुई...
...तो फिर सोचने के लिए हम बचेंगे नहीं!
दो अलग-अलग प्रजातियां अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रही थीं-
और परिस्थितियां बता रही थीं कि एक का अस्तित्व बचाने के लिए दूसरे को मिटना ही पड़ेगा!
इन जड़ों के बीच से सिकुड़कर आगे बढ़ना तुम्हारे नाग गुणों वाले शरीर के लिए आसान होगा, नागराज! पर डोगा मुसीबत को जड़ से उखाड़ फेंकता है!

इसीलिए डोगा इन जड़ों को ही उखाड़ फेंकेगा!
हा हा हा! अपनी ताकत को बचाकर रखो डोगा! मेरे पीछे आ जाओ!

मैं इन जड़ों को तुम्हारे रास्ते से हटा देता हूं!
तुमने इस बात पर ध्यान दिया है या नहीं, नागराज!
कि एक-दूसरे से गुंथी हुई ये जड़ें कई किलोमीटर लंबी हैं, और ये सभी एक ही दिशा में बढ़ रही हैं!
विषफुंकार, पेड़ों की जड़ों से जीवन का नामोंनिशान मिटाती चली गई-

"टेरा फोर्स' ऑपरेट करने वाले एजेंट परमाणु को मैसेज भेज दो! ताकि जड़ों का पीछा करके उस तक पहुंचने की कोशिश करने वाले इन अद्भुत मानवों को खतरा पैदा होने से पहले ही खत्म किया जा सके-"
" जो आज्ञा, कौंसिल! मैसेज परमाणु के पास भेजा जा रहा है-"
अपने आपको ब्रह्मांड रक्षक कहने वाले मानव इधर आ रहे हैं! पर ये 'टेरा फोर्स' की ताकत से अभी तक अंजान हैं!
'टेरा फोर्स' सिर्फ पेड़ों के उगने को ही नहीं, बल्कि हर उस चीज को नियंत्रित कर सकती है, जिससे ये भूमि बनी है!
" अब ये मानव जो भी कदम उठाएंगे वह उनकी मौत की तरफ बढ़ेगा-"
ये जड़ें तो खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही हैं! इनका कोई अंत है भी या नहीं!
कहीं हम गलत दिशा में तो नहीं जा रहे हैं!
पर अब आगे कैसे बढ़ें? अब तो जड़ें इतनी घनी हो चुकी हैं कि आगे बढ़ने की जगह बची ही नहीं है!
घबराओ मत। मैं अभी इन जड़ों को जलाकर आगे बढ़ने की जगह बना देती हूं!
नहीं परमाणु! दिशा एकदम सही है!
और इसका सबूत है ये जड़ें! ये जड़ें और घनी होती जा रही हैं!
इतनी घनी होती जड़ों का एक ही अर्थ है कि हम जड़ों के उगने के स्थान की तरफ बढ़ रहे हैं!
शक्ति का हाथ उठा-

और उठा ही रह गया-
अरे! अभी तक तो ये जड़ें एकदम शांत थीं! फिर अचानक इनमें हरकत कैसे होने लगी है?
ये किसी खतरनाक प्राणी का रूप धारण कर रही हैं!
और इनमें अजीब सी ऊर्जा भी बहने लगी है!
चिन्ता मत करो! है तो ये लकड़ी से बना हुआ ही एक प्राणी! इसीलिए ये जड़-जड़ी मेरे परमाणु ब्लास्टों को सह नहीं सकता!
मैं अभी इसको तिनकों में बदल देता हूं!
ये मामूली आफत ब्रह्मांड रक्षकों का रास्ता रोक नहीं सकती!
परमाणु ब्लास्ट ने जड़जड़ी के शरीर को तिनकों में बदलना शुरू कर दिया-

शाबाश परमाणु! तुमने इसका जितना अच्छा नाम रखा है, उतनी ही अच्छी तरह से तुम इससे निपट रहे हो!
काम बहुत आसान था-
तुम्हारे जैसे ब्रह्मांडरक्षकों के होते कोई भी मुसीबत हमारा रास्ता नहीं रोक सकती!
पर ऐसा ब्रह्मांड रक्षक सिर्फ समझ रहे थे-
आSSSह! मैं आगे से इसके चिथड़े उड़ा रहा हूं तो ये अपने शरीर को पीछे से उगा ले रहा है, क्योंकि ये जड़ें दरअसल एक ही जड़ के अलग-अलग हिस्से हैं और आपस में जुड़े हुए हैं!
इस पर ब्लास्ट मारना परमाणुएनर्जी की बर्बादी करना है!
तो फिर मुझको अपनी ऊष्मा शक्ति का प्रयोग करने दो! मेरी ऊष्मा लोहे तक को पिघला सकती है, फिर ये लकड़ी भला क्या चीज है!
शक्ति की ऊष्मा लहरें जड़जड़ी के शरीर से टकराईं और लकड़ियां दहक उठीं-
तुम्हारे परमाणु ब्लास्ट का असर इन जड़ों के एक हिस्से तक ही था!
पर मेरी ऊष्मालहरें जड़ों के हर हिस्से को लपटों में लपेट देंगी!
शक्ति का वार जड़जड़ी को नुकसान तो जरूर पहुंचाने वाला था-

लेकिन उससे कहीं ज्यादा नुकसान ब्रह्मांड रक्षकों को होने वाला था-

ओफ्फ! रोको अपनी ऊष्मा को शक्ति! इस सुरंग में धुआं भरने से दम घुट रहा है और लपटें यहां पर मौजूद रही सही ऑक्सीजन को भी खींच ले रही हैं!

ओफ्! फिर हम और क्या कर सकते हैं!

ब्रह्मांड रक्षकों की दूसरी टीम अभी तक सलामत थी-

शुक्रिया, नागराज! अब कम से कम आगे बढ़ने की जगह तो बनी!

उम्मीद है कि अब हमारी मंजिल ज्यादा दूर नहीं होगी!

मैं एक आश्चर्यजनक बात नोट कर रहा हूं डोगा, प्रागैतिहासिक जीव सिर्फ जमीन के ऊपर ही नजर आ रहे हैं!

जबकि प्राचीन समय में भी जमीन के नीचे रहने वाले खतरनाक प्राणियों की कोई कमी नहीं थी! अरे! ये आवाज कैसी थी?

कड़च

लकड़ी के टूटने और कुछ चबाने की आवाज है, नागराज!

सूखी लकड़ी टूटी है! यानी, कोई मेरे जहर से सूखी जड़ों को चबा रहा है! मेरे जहर को पचा रहा है!

और वो कोई अब हमको खाने के लिए आ रहा है!
मुझे लगता है कि तुम्हारी जमीन के नीचे प्रागैतिहासिक जीव को देखने की इच्छा पूरी हो गई है, नागराज! पर ये है क्या चीज?
जो भी है डोगा, वह मेरे जहर को आराम से पचा सकता है! लगता है जैसे कि जहर ही इसका भोजन है! इसका मुख्य ऊर्जा स्रोत!
और अगर ऐसा है तो इस पर जहरीले वार करके मैं इसकी ताकत को और बढ़ाऊंगा!
यानी मैं इस पर जहरीले वार नहीं कर सकता हूं!
खतरा इससे भी कहीं बड़ा है, नागराज! अगर जहर इसका भोजन है तो वह तुम्हारे अंदर भरपूर है! इसका मतलब... तुम इसका भोजन हो! इसका मुख्य निशाना! इसीलिए पीछे हटो और डोगा को इसे फाड़ने दो!
बारूद का वह धमाका दीवार तक में छेद कर सकता था-

लेकिन दीवार उस प्राणी के शरीर के मुकाबले शायद कम मजबूत थी-
ओह! इसकी खाल तो बुलेटप्रूफ है! ये तो चलता-फिरता टैंक है, नागराज! और यहाँ पर इससे बचने के लिए जगह भी नहीं है!
इससे बचने की जरूरत नहीं है डोगा! मेरे नाग इसको जड़ों से जकड़ देंगे! और फिर मैं इसके शरीर में मौजूद जहर को चूसकर इसको शक्तिहीन कर दूंगा!
कुछ ही पलों बाद वह जहरीला टैंक जड़ों से नागबंधनों के द्वारा बंधा हुआ था-
अब मैं इसमें मौजूद जहर को चूस लूंगा!
नागबंधन तो काफी मजबूत थे-
लेकिन जड़ें उतनी मजबूत नहीं थीं-
ओफ़!
इच्छाधारी शक्ति न होती तो मैं कभी न बचता!
नागराज तो गायब होकर बच सकता था-
लेकिन अपनी गंध को गायब नहीं कर सकता था-
ओफ़! इसने तो मुझको सामान्य रूप में आते ही किसी चिपचिपे पदार्थ के खोल में कैद कर दिया है!
जैसे कुछ सरीसृप कीड़ों को पकड़ने के लिए करते हैं!
लार टपकाता वह खतरनाक मुँह नागराज को निगल गया होता-

अगर डोगा का वह वार उस मुँह को दूसरी तरफ न मोड़ देता-
मैं कोशिश कर रहा हूं डोगा! पर चिपचिपा होने के कारण ये खोल फट नहीं पा रहा है!
फिर तो मुझे ही कुछ करना होगा!
आ! आ! मुझे निगल! खाले मुझे!
नागराज! बाहर निकलने की कोशिश करो! मेरे वार इसको ज्यादा देर तक रोक नहीं पाएंगे!
और तो और बदन से चिपका होने के कारण ये इच्छाधारी रूप में भी मेरा पीछा नहीं छोड़ रहा है!
डोगा इसका ध्यान अपनी तरफ खींच रहा है!
यह खतरनाक हो सकता है!
ब्रह्मांड रक्षकों के साथ-साथ पूरी मानव जाति भी अंत के कगार पर पहुंच गई थी-
डोगा! ऐसा मत...
ओफ़! देर हो गई! ये जीव डोगा को साबुत निगल गया है!
हा हा हा हा! ये भी गए!
अब मैं 'टेरा पॉवर' को फिर से डिफेंस मोड पर डाल सकता हूं!
मानव बंदर बनते आ रहे थे-
और नए-नए प्रागैतिहासिक जीव प्रकट होते आ रहे थे। ये विनाश तभी रुक सकता था-

जब ब्रह्मांड रक्षक अपने खुद के विनाश को रोक पाते-
आऽऽऽह!
जमीन के नीचे ये प्लास्टिक का पाइप! क्या ये हमारी मदद कर सकता है!
शायद कर सके! पर पहले मुझको अपनी स्थिति का पता लगाना पड़ेगा!
कुछ ही पलों के बाद-
शुक्र है कि हमारी सेटेलाइटें अभी भी काम कर रही हैं!
और उससे मुझको स्थिति का पता चल गया है!
वह तो मुझे पहले ही पता है ध्रुव! हमारी स्थिति खराब है! इसने मेरी बेल्ट को ऐसे दबा रखा है कि न तो मैं इसके बटन दबा सकता हूं और न ही 'वॉयस एक्टीवेट' कर सकता हूं!
तब तो ये काम शक्ति को करना पड़ेगा!
कैसा काम ध्रुव?
मेरी आवाज बेल्ट तक पहुंचती ही नहीं!
मेरे सिर के ऊपर वाले प्लास्टिक पाइप को पिघला दो!
शायद तुम इसको प्लास्टिक के खोल में कैद करना चाहते हो!
पर इतनी सी प्लास्टिक से होगा क्या? खैर इसको पिघलाने में क्या जाता है!
प्लास्टिक पिघला-
और तरल पदार्थ की एक मोटी धार जड़जड़ी को भिगोने लगी-

अरे! ये क्या? जड़ें गल रही हैं! पर कैसे?
इस पाइप में गाढ़ा एसिड भरा हुआ है! अपने स्टार ट्रांसमीटर की मदद से मैंने अपनी स्थिति पता की तो मुझे मालूम हुआ कि हम मोदी केमिकल्स की विशाल फैक्ट्री के ठीक नीचे मौजूद हैं!
अब जड़ें शांत हैं, और एसिड इनको गलाकर आगे का रास्ता भी बनाता जा रहा है!
जल्दी ही हमको इन जड़ों की जड़ का पता चल जाएगा!
इसी से मैंने अंदाजा लगाया कि ये प्लास्टिक पाइप जरूर एसिड को ट्रांसपोर्ट करने का जरिया है! क्योंकि आमतौर पर एसिड प्लास्टिक से प्रतिक्रिया नहीं करता!
अब जल्दी से कूदो वर्ना हम भी गल जाएंगे!
ब्रह्मांड रक्षकों की एक टीम ने मौत पर विजय पा ली थी-
पर दूसरी टीम अपना एक सदस्य पहले ही खो चुकी थी-
और दूसरा सदस्य भी अपनी जान खोने ही वाला था-
आज मैं पहली बार ध्वंसक सर्पों का प्रयोग अपने आप पर करूंगा!
आऽऽऽह!
डोगा इस प्राणी के पेट में है! मुक्तेसमय रहते उसको बचाना होगा! और उसके लिए मुझे कैद से आजाद होना ही पड़ेगा...
...विशेष नागफनी सर्प!
बाहर आओ!
ताकि इनकी गर्मी से ये चिपचिपा पदार्थ सूखकर पपड़ जैसा सख्त हो जाए!

और मैं इसकी पतली पर्त को तोड़कर आजाद हो जाऊं!
अब इससे पहले कि डोगा पच जाए मुझे उसको इसके शरीर से बाहर निकालना होगा!
डोगा के बारूदी वार तो इस पर नाकामयाब रहे थे! पर देखते हैं कि चमत्कारी नागफनी सर्पो के कांटे...
... इसके पेट को फाड़कर डोगा को निकाल पाते हैं या नहीं!
गुड! इसके पेट पर खरोंचे पड़ रही हैं! अगर इन खरोंचों पर ही बार-बार वार किया जाए...
... तो इसका पेट फट भी सकता है!
इसका पेट तो अपने आप ही फट गया! पर कैसे?
डोगा... तुम! तुमने किया ये धमाका?
हां, नागराज! बाहर से इसका पेट नहीं फट रहा था तो मैंने सोचा कि अंदर से कोशिश करूं!
बस अंदर जगह जरा तंग थी! बंदूक सीधी करने में टाइम लग गया!

तुम भी बस कमाल हो, डोगा! लोगों को मौत से डर लगता है, पर मौत को शायद तुमसे डर लगता होगा!
मौत को लगे न लगे नागराज, पर उस प्राणी को डोगा से जरूर डर लगेगा जिसने प्रकृति का चक्र पलटकर मानवों का विनाश करने की कोशिश की है!
वह प्राणी पल्लप ज्यादा दूर नहीं था-
अब हमारी मंजिल ज्यादा दूर नहीं है! सिर्फ आधे घंटे में हमारी मंजिलें हमारे सामने होंगी!
और दो लाख टिब्बासियों को एक नई जिन्दगी मिल जाएगी!
नए ग्रह पर एक नई जिन्दगी!
और टिब्बासियों को वह जिन्दगी मिलेगी पृथ्वी की पूरी सभ्यता का विनाश करके!
मानवों से जान मांगोगे तो वे हंस कर जान दे देंगे!
पर अगर जबरदस्ती छीनोगे तो तुम्हारी जान ले लेंगे!
ब्र... ब्रह्मांड रक्षक! तुम बच गए! तुम सब बच गए!
पर... पर कैसे? कैसे?
खैर, तुम्हारी जान लेना हमारा मकसद नहीं है!

वापस चले आओ, और अपनी जानें बचा लो!
समझ लो कि ये बात तुमने हमसे नहीं, बल्कि हमने तुमसे कही है!
छोटा मुंह और बड़ी बात!
मानव के रूप में भी तुम बुद्धिमत्ता में हमारी बराबरी नहीं कर सकते थे!
और अब तो तुम्हारी बुद्धि और भी ज्यादा कमजोर है!
फिर भी उसे ठिकाने तो लगाना ही पड़ेगा!
तुम लोग शवों को जमीन में दफनाते हो न! जमीन उसको अपने अंदर मिलाने में कुछ महीने का वक्त लेती है!
आऽऽऽ ह! पोशाकें कुछ पलों तक तो हमको बचा लेंगी, पर उसके बाद क्या होगा! ये मिट्टी तो हमको मिट्टी बनाने के बाद ही छोड़ेगी!
इच्छाधारी शक्ति भी मुझे बचा नहीं पाएगी! क्योंकि ये मिट्टी मेरी खाल के अंदर घुस चुकी है! मेरे साथ-साथ यह भी इच्छाधारी शक्ति के क्षेत्र में आकर इच्छाधारी कणों में बदल जाएगी!
कुछ ही देर बाद में यहां से रवाना हो जाऊंगा, क्योंकि तब तक मेरा काम पूरा हो चुका होगा, और तुम्हारा काम तमाम हो चुका होगा!
पर टेरा फोर्स से स्नर्जाइज्ड होने के बाद ये जमीन गलाने का काम कुछ ही पलों में कर देंगी!
दूसरी दुनिया मुबारक हो!
क्या सचमुच अब बचने का कोई रास्ता नहीं है?
अरे! मुझ पर पानी की बूंद कहां से टपकी?
समझ गया!
नागराज! अपने सर्पों से छत में एक सुरंग खुदवाओ! जल्दी!
पर उससे होगा क्या? खैर! जिन्दगी में पहली बार छत में सुरंग खोद रहा हूं!
अब तक तो जमीन में ही खोदी है!

और उनसे...उलग! ओफ़! ये क्या है?
राजनगर की इन्द्र झील का पानी है ये नागराज!
छत से पानी की बूंदें टपकती देखकर जब मैंने जमीन के नीचे अपनी स्थिति का अनुमान लगाया तो मुझे आभास हुआ कि हम इन्द्र झील के नीचे ही सकते हैं!
और इस आभास को यकीन में तुमने बदल दिया!
अब ये पानी मिट्टी को बहाकर अपने साथ ले आ रहा है! वाह, ध्रुव! जमीन के नीचे भी तुम अपने मतलब की चीजों को ढूंढ ही लेते हो! पहले एसिड का पाइप और अब ये झील का पानी!
ओफ़!
मेरा मशीन को ये पानी कबाड़ में बदल रहा है!
अब मैं यहां पर रुककर और कुछ नहीं कर सकता! मुझको जाना ही होगा!

पल्लप को वापस बुलाना होगा! 'टेलीपोर्टेशन रे' को एक्टीवेट करने का आदेश दें काउंसिल!
सिर्फ पल्लप को ही नहीं, इन सबको यहां पर बुलाना होगा! हम अपनी मंजिल के काफी करीब हैं! इन ब्रह्मांड रक्षकों को पृथ्वी पर छोड़-कर हम कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहते!
पर काउंसिल, उनको यहां पर बुलाकर हम कहीं खतरे को बढ़ा तो नहीं लेंगे!
अगर कहीं उन्होंने हमारी स्पेस शिप में गड़बड़ी करदी तो...
कोई गड़बड़ी नहीं होगी! मैंने पूरा इंतजाम कर रखा है!
उनको भी यहीं पर टेलीपोर्ट करो!
"आदेश का पालन होगा, काउंसिल!"
अब ये हमको बताएगा कि इस षड्यंत्र के पीछे इनका क्या मकसद है?
शायद नहीं! क्योंकि ये गायब हो रहा है!
कुछ गड़बड़ है! सिर्फ ये ही नहीं, हम सभी गायब हो रहे हैं!
पर हम सब जा कहां रहे हैं?

ब्रह्मांड रक्षकों को जवाब जल्दी ही मिल गया-
ये हम कहां आ गए हैं?
ये जरूर उन परग्रहियों का शहर है! लेकिन यहां पर तो किसी की परछाई तक नजर नहीं आ रही है!
इमारतों की परछाईयों के अलावा!
ये उन परग्रहियों की चाल है! उन्होंने हमको टेलीपोर्ट करके शायद अपने वीरान ग्रह पर पहुंचा दिया है!
वे चाहते हैं कि हम यहीं पर भटकते रह जाएं और वे पृथ्वी पर मानवों का विनाश कर दें!
हमको यहां से बाहर निकलने का रास्ता ढूंढना ही पड़ेगा! जल्दी!

काउंसिल की चाल सफल हो गई थी-
आपकी सोच पर पहले मुझे भरोसा नहीं था, काउंसिल! पर अब मैं शर्मिन्दा हूं!
आप ब्रह्मांड के सबसे बुद्धिमान प्राणी हैं!
ये बात तब कहना जब हम टिब्बासियों को नया जीवन दे सकें! अब पृथ्वी पर ध्यान दो! पल्लप की टेरा पावर बीच में रुक जाने के कारण हमारा काम धीमा जरूर पड़ गया है! लेकिन अब मंजिल कुछ ही मिनटों की दूरी पर है! पृथ्वी मैसोनिक युग में प्रवेश कर चुकी है! डायनासोरों के अंतिम काल के डायनासोर नजर आने लगे हैं! जल्दी ही वह समय भी आ जाएगा जब हमको दिखेगा, वह बेशकीमती डायनासोर जिसको पृथ्वीवासी कहते हैं... टायरेनोसॉरस रेक्स!
मानव जाति संपूर्ण विनाश के मोड़ तक पहुंच गई थी-

और ब्रह्मांड रक्षक न जाने कहां पर फंसे हुए थे-
और वहां से बाहर निकलने का रास्ता ढूंढ रहे थे-
हम रास्ता ढूंढ- ढूंढकर थक गए हैं! इस शहर में एक चूहा तक नहीं है! और इस शहर का तो कोई अंत भी नहीं नजर आ रहा है!
लगता है जैसे कि यह शहर इस पूरे ग्रह पर फैला हुआ है!
बहुत दौड़ लिए हम!
कीमती पल एक-एक करके बेकार हुए जा रहे हैं!
मैं ऊपर से जाकर देखता हूं, शायद कोई रास्ता नजर आ जाए!
मैं इस ग्रह के वातावरण की आखिरी पर्त तक आ गया हूं! यहां से भी इस शहर का कोई अंत नजर नहीं आ रहा है!
और मेरा 'बायो स्कैन' बता रहा है कि हजारों किलोमीटर लंबे और चौड़े इस महानगर में सिर्फ चार जीवित प्राणी हैं! सतह पर मौजूद चार ब्रह्मांड रक्षक!
सॉरी फ्रेंड्स!
यह शहर सच-मुच पूरे ग्रह पर फैला है! और एकदम वीरान है!

अब तो एक ही रास्ता बचता है! हमको अंतरिक्ष के रास्ते से पृथ्वी पर पहुंचना होगा!
हम सभी अंतरिक्ष में नहीं जा सकते, परमाणु!
अगर यहां पर कोई अंतरिक्ष यान जैसी चीज मिल जाए तो हम कोशिश जरूर कर सकते हैं!
ऐसा अगर हो भी जाए तो भी हमको यह नहीं पता है कि हम ब्रह्मांड के किस हिस्से में हैं! फिर हम पृथ्वी का रास्ता ढूंढेंगे कैसे?
तुम एकदम चुप क्यों हो, ध्रुव?
मानव जाति नष्ट होने की कगार पर है, और तुम बादलों को देख रहे हो?
श श श! मैं बादलों को नहीं देख रहा! मैं कुछ सोच रहा हूं! आखिर इतनी...
...ओ माई गॉड!
वो देखो! उस बादल को देखो!
क्या खास है उस बादल में? वह बस एक मामूली बादल ही तो है!
हां! यह बादल काफी आम है! क्योंकि ठीक इसी आकार का एक बादल अभी दो मिनट पहले भी आकाश से गुजरा था!
हां तो! एक जैसे आकार के कई बादल हो सकते हैं!
कोई भी दो बादल एकदम एक जैसे नहीं हो सकते परमाणु!
ये वही बादल है जो दो मिनट पहले यहां से गुजरा था!
इसका भला क्या मतलब हो सकता है!
मतलब कि यह एक साइकिल है! एक चक्र! वही चीजें हमको बार-बार दिख रही हैं!
हां! रास्ता ढूंढते वक्त कुछ इमारतों को देखकर मुझको भी ऐसा लगा था जैसे कि उनको हम पहले देख चुके हैं!
बिल्कुल ठीक होगा! क्योंकि हमको एक ही चीज बार-बार दिखाई जा रही है!

दिखाई आ रही है? इसका क्या मतलब है?
ये पूरा शहर असली नहीं है! एक छाया है! एक प्रोजेक्शन! पर यह प्रोजेक्शन एक विकसित विज्ञान द्वारा बनाया गया है! इसीलिए यह छाया भी हमको ठोस लग रही है!
सीधे शब्दों में कहें तो यह शहर असली नहीं है! यह सिर्फ एक 'सॉलिड प्रोजेक्शन' है!
यानी यह एक भ्रमजाल है! पर अगर यह दृश्य एक भ्रमजाल है तो आखिर हम हैं कहां पर?
अभी पता चल जाएगा! अपने आपको दूसरे ग्रह पर पहुंचा जानकर मैंने अभी तक अपने ट्रांसमीटर में फिट G.P.S. यानी 'ग्लोबल पोजी शिनिंग सिस्टम' का इस्तेमाल नहीं किया था!
अब G.P.S. क्या बता रहा है ध्रुव? कहां पर हैं हम?
यह जानकर तुम चौंक जाओगे परमाणु!
हमारी टीम पृथ्वी पर जाकर उस डायनासौर की स्थिति का पता लगाएगी!
और फिर हम 'टेलीपोर्टेशन बीम' के द्वारा उसको ऊपर खींच लेंगे!
टिब्बासियों ने ब्रह्मांड रक्षकों पर नजर रखने की जरूरत तक नहीं समझी थी-
उनका पूरा ध्यान पृथ्वी पर था-
अब 'टाइरेनोसॉरस रेक्स' किसी भी समय धरती पर प्रकट हो सकता है!
एक्सप्लोरर टीम को पृथ्वी की सतह पर जाने की इजाजत दीजिए काउंसिल!
ठीक है! टेलीपोर्टेशन बीम को तैयार करो!
तो यह है तुम्हारी मंजिल!
पृथ्वी का एक प्राचीन सरीसृप टाइरेनोसॉरस रेक्स!

क्या करोगे तुम इनका? किसी अंतर्ग्रहीय चिड़ियाघर में रखोगे क्या?

ब्रह्मांड रक्षक! तुम... तुम सब यहां पर? असंभव! 'वीरान नगर' से तो आजतक कोई भी आजाद नहीं हो पाया था। कैसे निकले तुम सब वहां से?

एक बार जब हम यह समझ गए कि वह शहर सिर्फ एक सॉलिड प्रोजेक्शन है तो हमने सेटेलाइट से अपनी स्थिति का पता किया! और हम यह जानकर चौंक गए कि हम अपनी सेटेलाइटों के एकदम करीब थे! अंतरिक्ष में!

यह जानने के बाद यह समझना मुश्किल नहीं था कि हम अंतरिक्ष में सिर्फ एक ही स्थान पर हो सकते थे! परग्रहियों की स्पेस शिप पर!

अब सवाल था कि उस 'वीरान नगर' से बाहर कैसे निकला जाए! प्रोजेक्शन का ठोस होना हमको रास्ता ढूंढने से रोक रहा था! लेकिन जहां पर प्रोजेक्शन होता है वहां पर प्रोजेक्टर का होना भी जरूरी है!

और चारों तरफ एक समान प्रक्षेपण यानी ट्रांसमिशन करने के लिए प्रोजेक्टर का बीच में रखा होना जरूरी है! बस हमने प्रोजेक्टर को ढूंढ निकाला! उसको नष्ट किया!

और अपने अंदाजे के ही मुताबिक अपने आपको इस यान में पाया!

अब तुम बताओ क्यों चाहते हो तुम डायनासौरों को?

या इसकी आड़ में तुम मानवों का विनाश करके पृथ्वी पर कब्जा करना चाहते हो... अरे!

घबराओ मत! तुम्हारे सभी सवालों के जवाब मैं दूंगा! लेकिन अपनी शर्तों पर!

यह 'जेली-फोर्ट' है! इसमें मौजूद हवा के बुलबुले तुमको मरने नहीं देंगे! और जेली तुम्हारी किसी भी शक्ति को बाहर निकलने नहीं देगी! और हां, खुद निकलने की तो कोशिश भी मत करना! यह जेली हर जैवीय पदार्थ को गला सकती है! एक पल में!

हम टिब्बासी ऊर्जा से जीने वाले प्राणी हैं, और यह ऊर्जा हम खुद अपने शरीर के अंदर पैदा करते हैं! एक टिब्बासी इतनी ऊर्जा पैदा कर सकता है जितनी कि तुम्हारा एक महानगर पूरे एक साल में खर्च करता है! इस कारण हम लगभग अमर हैं!
हमारी आयु तुम्हारे समय के अनुसार लाखों करोड़ों वर्षों की होती है! बेपनाह आयु होने के कारण हमने विज्ञान में बेहिसाब तरक्की की! अपने आपको विधाता समझ बैठे! परन्तु पिछले कुछ समय पहले हमारी यह सोच भंग हो गई!
एक अंजान विषाणु ने हमारे शरीरों पर हमला किया, और हमारी ऊर्जा को नष्ट करने लगा! पहले मौत हमारे ग्रह पर कभी- कभी घटने वाला हादसा होती थी। पर ऊर्जा के नष्ट होने से देखते ही देखते कई टिब्बासी काल के गाल में चले गए!
तब हमारे विज्ञान ने हमारी मदद की! हमने विषाणु को मारने वाली दवा का फार्मूला ढूंढ लिया! पर लाख कोशिशों के बावजूद भी हम वह दवा नहीं बना पाए! प्रयोगों में हमेशा कुछ न कुछ गड़बड़ हो जाती थी! तब हमने स्पेक्ट्रो मीटर के जरिए ब्रह्मांड के ग्रहों को छानना शुरू किया! उससे हमको ऐसे ग्रहों का पता चला जहां पर उस दवा में मौजूद तत्त्वों से बनी कुछ चीजें थीं! हमने उन ग्रहों पर उन चीजों के सैम्पल लाने के लिए तेज गति से चलने वाले छोटे यान भेजे! उन ग्रहों में एक ग्रह पृथ्वी भी थी!
उस वक्त पृथ्वी पर डायनासौर युग चल रहा था! और उस दवाई के सभी तत्त्व एक सरीसृप टाइरेनोसॉरस रेक्स के मांस में मौजूद थे! पर ये पता करना जरूरी था कि वे सभी तत्त्व सही मात्रा में हैं या नहीं! इसीलिए बाकी ग्रहों की अन्य चीजों के साथ-साथ हम सरीसृप के मांस का सिर्फ एक सैम्पल ही पृथ्वी से ले गए!
और चमत्कार हो गया! सरीसृप के मांस से बनी दवा ने विषाणु का नाश कर दिया! दवा हमको मिल चुकी थी! पर पूरे ग्रह को ठीक करने के लिए दवा भारी मात्रा में चाहिए थी!

पर विषाणु के कारण फैली बीमारी अब घातक स्तर पर पहुंच चुकी थी! इंफेक्शन से ग्रस्त टिब्बासियों के पास ज्यादा वक्त नहीं था! इसीलिए हमने तय किया कि दवा को टिब्बासी लाने के बजाय जिन्दा बचे दो लाख टिब्बासियों को ही दवा के पास तक ले जाया जाए!

हम जैसे कुछ टिब्बासी अभी भी काफी हद तक स्वस्थ थे! हमने अपनी सबसे बड़ी शिप को तैयार किया और दो लाख टिब्बासियों को उसमें लेकर हम पृथ्वी की तरफ चल पड़े!

पर किस्मत हमारे साथ नहीं थी! पृथ्वी की तरफ बढ़ते वक्त हम एक 'टाइम जोन' में फंस गए! एक ऐसा क्षेत्र जहां समय का तूफान पल-पल बदलता रहता है! कभी तेज कभी धीमे तो कभी स्थिर!

उस 'टाइमजोन' में फंसने के कारण समय हमारे लिए तो स्थिर रहा परन्तु बाकी ब्रह्मांड का समय बदलता रहा!

इसलिए जब हम टाइम जोन से बाहर निकले तो हमारी प्रजाति के बचने के सभी रास्ते बंद हो चुके थे! विकास के चक्र के कारण पृथ्वी पर डायनासौर लुप्त हो गए थे और मानव राज कर रहे थे!

अब हमारे सामने एक ही रास्ता था! विकास के चक्र को उल्टा करना और डायनासौरों को फिर से पैदा करना!

जब हमारा छोटा यान पृथ्वी पर जुरासिक काल में आया था तो उसमें उस वक्त की पृथ्वी का पूरा डाटा रिकार्ड हो गया था! पृथ्वी का तापमान वायुमंडल और सागर का दाब, पृथ्वी की घूर्णन गति उसकी धुरी का कोण, सभी कुछ!

अब यह काम दो तरफ से एकसाथ करना था! पृथ्वी को उस समय की स्थिति पर वापस लाना और जैविक विकास चक्र को उल्टा चलाना!

हमारे प्रयोगों से यह पता चल गया था कि यह जैविक विकास वास्तव में जीवन के केन्द्र डी.एन.ए. का विकास था! सबसे पहले हमने पृथ्वी के वायुमंडल में ऐसे रसायन फैलाए जो डी.एन.ए. का क्षरण करके विकास चक्र को उल्टा कर दें!

और उसके बाद हम पृथ्वी को उस वक्त के रूप में लाने में जुट गए! पहले समुद्र तल में विस्फोट करके जमीन के टुकड़ों को पृथ्वी के केन्द्र की तरफ ढकेला ताकि धीमी हो चुकी पृथ्वी की घूर्णन गति तेज हो जाए और उसकी धुरी में बदलाव आ जाए!
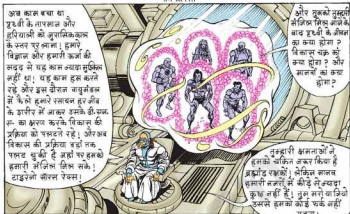
अब काम बचा था पृथ्वी के तापमान और हरियाली को जुरासिककाल के स्तर पर लाना! हमारे विज्ञान और हमारी ऊर्जा की मदद से यह काम ज्यादा मुश्किल नहीं था! यह काम हम करते रहे और इस दौरान वायुमंडल में फैले हमारे रसायन हर जीव के शरीर में जाकर उसके डी.एन.ए. का क्षरण करके विकास की प्रक्रिया को पलटते रहे! और अब विकास की प्रक्रिया वहां तक पलट चुकी है जहां पर हमको हमारी मंजिल मिल सके! टाइरेनो सॉरस रेक्स!
और तुमको तुम्हारी मंजिल मिल जाने के बाद पृथ्वी के जीवन का क्या होगा? विकास चक्र का क्या होगा? और मानवों का क्या होगा?
तुम्हारी क्षमताओं ने हमको चकित जरूर किया है ब्रह्मांड रक्षकों! लेकिन मानव हमारी नजरों में कीड़े से ज्यादा कुछ नहीं हैं! तुम मरो या जियो उससे हमको कोई फर्क नहीं पड़ता!

काउंसिल! बधाई हो! पृथ्वी पर पहला टाइरेनो-सॉरस रेक्स नजर आ गया है! वह महानगर नाम के स्थान पर देखा गया है!
शुक्र है! अब बीमार टिब्बासियों की जिन्दगी भी ज्यादा नहीं बची है! उस डायनासौर को टेलीपोर्ट करो! उसको जिन्दा यहां पर लाना होगा! अगर वह मर गया तो उसके मांस से हम जीवनदायी सीरम को नहीं निकाल पाएंगे!
ब्रह्मांड रक्षक अपने ट्रांसमीटरों की मदद से अभी भी एक-दूसरे से बात कर सकते थे-
इनको ऐसा करने से रोकना होगा!
हां! वर्ना अगर ये कामयाब हो गए तो मानव खत्म हो जाएंगे!
पर हम क्या करें? न हम 'जेलीफोर्ट' से बाहर निकल सकते हैं और न ही हमारी शक्तियां!
एक रास्ता है इनको रोकने का! अगर इनको डायनासौर जिन्दा न मिलें तो?
तो ये फेल हो जाएंगे!
पर ऐसा होगा कैसे?
ये काम तुम करोगे नागराज!
महानगर में मौजूद तुम्हारे जासूस सर्प करेंगे!
ऐसा तभी हो सकता है जब उन पर उल्टे विकास चक्र का असर न पड़ा हो!
वे डायनासौर को विषदंश से मार सकते हैं! उनसे संपर्क करो!

वे सामान्य सर्प नहीं हैं, नागराज! तुम्हारे शरीर से पैदा होने वाले सर्प हैं! शायद इसी कारण उनके डी. एन. ए. का इतना तेज क्षरण न हुआ हो!
हो सकता है! कोशिश करने में कोई नुकसान नहीं है!
और न ही डी. एन. ए. में हो रहा बदलाव स्वामिभक्ति की भावना को रोक सकता था-
नागराज के सर्पों में बदलाव जरूर आया था! लेकिन अभी भी नागराज के आदेश का पालन करना उनका पहला फर्ज था-
'जेली फोर्ट' मानसिक तरंगों को रोक नहीं सकता था-
टेलीपोर्टेशन बीम में घिरता टाइरेनो सॉरस रेक्स साथ ही साथ नागराज के सर्पों से भी घिरता चला गया-
और उसके शरीर में दर्जनों विषदंशों का विष भरता चला गया-
डायना सौर के स्पेस-शिप में टेलीपोर्ट होने से-
टिब्बासी खुश तो जरूर हुए-
हा हा हा! हम सफल हो गए! मौत को हराने का उपाय अब हमारे पास है!
मौत इसको पहले ही हरा चुकी है, काऊंसिल! यह मर चुका है!
लेकिन यह खुशी क्षणिक थी-
पर कैसे? ये सांप...
... ये विषदंश से मरा है! और ये काम सिर्फ एक ही मानव का हो सकता है!

नागराज का! अब इनमें से कोई भी जिन्दा नहीं बचेगा!
उसको तुरंत यहां टेलीपोर्ट करो! तब तक मैं इनको दूसरी दुनिया में टेलीपोर्ट करता हूं!
पर जल्दी करो! हमारे पास और दूसरे डायनासोरों को ढूंढने का समय नहीं है!
आऽऽऽह! अब इसको कैसे रोकें? अमेरिका में तो मेरे सांप भी नहीं हैं!
शक्ति! ऊष्मा शक्ति का प्रयोग करो!
पर उसका क्या फायदा? हमारी शक्तियां तो पार जा ही नहीं सकतीं!
आऽऽऽह! बुलबुले छोटे हो रहे हैं! हमको गलाने वाली जेली हमारे करीब आ रही है!
काऊंसिल! अमेरिका में एक दूसरे डायनासौर का पता चला है!
शक्तियों को पार जाना भी नहीं है! वर्ना गड़बड़ हो जायगी!
मैं समझी नहीं! लेकिन फिर भी अगर तुम चाहते हो तो ऐसा ही होगा!
शक्ति की ऊष्मा से होगा क्या, ध्रुव?
बुलबुले की हवा गर्म होकर फैलेगी! पहले हमारे सारे बुलबुले एक साथ जुड़ेंगे और फिर प्रकृति की शक्ति और टिब्बासी ऊर्जा में टकराव होगा!
"और टिब्बासी प्रकृति की शक्तियों से कभी जीत नहीं सकते—"
आऽऽह!
आजाद होते ही—

ब्रह्मांड रक्षकों ने सबसे पहला काम, टेलीपोर्ट मशीन को नष्ट करने का किया-
ओ SSSह! नहीं SSS
तुमने हमारी करोड़ों वर्षों की योजना को चौपट कर दिया! अब टिब्बासी नहीं बचेंगे!
खत्म हो जाएगी टिब्बासी प्रजाति! लेकिन मानव भी नहीं बचेंगे!
कुछ नहीं बचेगा पृथ्वी पर!
अब शायद पृथ्वी पर हमको टाइरेनो सॉरस रेक्स न मिले, लेकिन मानव भी नहीं मिलेंगे!
कंट्रोल सेट हो चुके हैं!
अब जब कई किलोमीटर लंबी और चौड़ी यह शिप धरती से टकराएगी तो पूरी पृथ्वी पर जीवन नष्ट हो जाएगा!
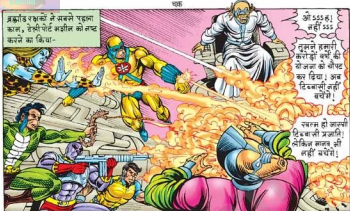
और ये सिर्फ तुम कुछ मानवों के कारण होगा!
कुछ नहीं होगा, काउंसिल, अगर तुम हमारा एक सौदा मान लो!
असंभव! उसके लिए हमको कम से कम पचास रेक्स चाहिए! और अब वह समय रहते कभी नहीं हो सकता!
हो सकता है! अगर तुम डी.एन.ए. का क्षरण करने वाले रसायनों को पृथ्वी के वातावरण से नष्ट कर दो!
तुम लोगों के साथ अब सिर्फ एक सौदा होगा!
मौत का सौदा!
तुम अभी भी अपने ग्रहवासियों को बचा सकते हो!
तुम मुझसे झूठ बोल रहे हो! चाल चलकर मानवों को बचाना चाहते हो!
अब हमको एक दो डायनासौर तो मिल सकते हैं लेकिन पचास कभी नहीं!
क्लोनिंग के बारे में कभी सुना है!
क्लोनिंग! यह क्या होता है?
किसी भी प्राणी के डी.एन.ए. से पूरा प्राणी बना सकने का विज्ञान!
तुम्हारे पास एक डायनासौर का सैंपल है न! उसमें से डी.एन.ए. निकालकर तुम जितने चाहो उतने डायनासौर बना सकते हो!
हमारे पास ऐसी कोई तकनीक नहीं है!
क्योंकि तुमको कभी जरूरत ही नहीं पड़ी! तकनीक हमारे पास है! क्योंकि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है!
क्या सचमुच ऐसा हो सकता है? मानवों के पास एक ऐसी तकनीक है जो हमारे पास नहीं है! और जो हमारी जान बचा सकती है!
मानवों को अपने से कम समझना हमारी भूल थी!
बल्कि तुम सबसे मिलकर तो ऐसा लगता है जैसे मानव कई क्षेत्रों में टिम्बासियों से भी आगे हैं!
सौदा पक्का!

और फिर कुछ ही देर बाद-
समय पर दवा बन गई और अब सभी दिव्यासी स्वस्थ हो गए हैं, ब्रह्मांड रक्षको।
तुम्हारी तकनीक और हमारे विज्ञान ने अब हाथ मिलाया तो कुछ ही देर में समस्या सुलझ गई। और वह भी बिना किसी लड़ाई झगड़े के।
अधिकतर मतभेद बातचीत से ही सुलझते हैं काउंसिल! झगड़े से कभी नहीं।
पृथ्वी के वातावरण से हमने डी.एन.ए. का क्षरण करने वाले रसायनों को हटाकर ऐसे रसायनों को फैला दिया है जो डी.एन.ए. को फिर से विकास की प्रक्रिया की तरफ ले आएंगे।
पर हमारी गलती से जो विनाश हो चुका है, उसको बदल पाना हमारे वश से बाहर की बात है।
कोई बात नहीं! हम कोई न कोई ऐसा रास्ता जरूर ढूंढ लेंगे जो पृथ्वी को वापस उसकी वर्तमान अवस्था में ले आए।
अब हमको विदा दो ब्रह्मांड रक्षको!
जब भी मौका मिलेगा, हम इस एहसान का बदला अवश्य चुकाएंगे।

और फिर-

शाबाश शक्ति! ये काम और किसी ब्रह्मांड रक्षक के बूते की बात नहीं थी!

लेकिन ज्वालामुखियों के रास्ते पृथ्वी के केंद्र में बढ़े द्रव्य को पृथ्वी की सतह पर लाकर पृथ्वी के घूर्णन को कम करने का आइडिया तो तुम्हारा ही था!

हमारे शहरों को सामान्य अवस्था में आते-आते थोड़ा समय और लगेगा ध्रुव!

हम मानवों ने कई आपदाओं से लड़कर उन पर विजय हासिल की है, नागराज! आज भी हम ऐसा ही करेंगे!

पहले मेरी आपदा दूर करो। कहानी तो अभी भी वहीं की वहीं है जहां से ये शुरू हुई थी!

अरे, शीना को मैं विनय के रूप में कैसे पटाऊं?